

# दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

नवम्बर-दिसम्बर, 2017



भारत में श्वेत क्रान्ति के प्रणेता

**डा. तार्गीलाल कुरियाना**

की 96वीं जयंती पर

सादर नमन

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस-26 नवम्बर

दुधारु पशुओं के पोषण पर विशेष सामग्री





एक दुग्ध सरिता...

“ जो बहती है गहरे सागर की तरफ,  
चल पड़ती है संपन्नता की ओर  
दूध उत्पादक एवम् किसानों को लेकर । ”



विविध पुरस्कारों से सम्मानित...

राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार : १४ बार

महाराष्ट्र राज्य सहकार भूषण पुरस्कार : ३ बार

महाराष्ट्र ऊर्जा विकास अभिकरण (महाऊर्जा) पुरस्कार : ४ बार



डी. व्ही. घाणेकर  
(कार्यकारी संचालक)

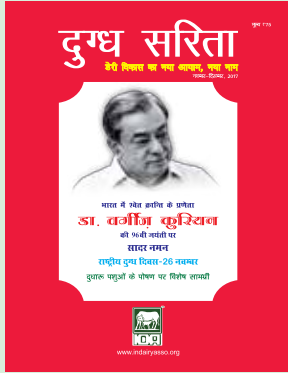
संचालक मंडळ

विश्वास नारायण पाटील (आबाजी)  
(चेअरमन)

कोल्हापूर जिल्हा सहकारी दूध उत्पादक संघ मर्यादित, कोल्हापूर.

बी - १, एम. आय. डी. सी. गोकुळ शिरगाव, कोल्हापूर ४१६ २३४. फोन : ०२३१-२६०२३११ ते १५ फॅक्स : २६०२३७४

E-mail : mktg@gokulmilk.coop | sales@gokulmilk.coop | Website : www.gokulmilk.coop



## दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम  
इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका  
वर्ष : 1 अंक : 2 नवम्बर-दिसम्बर 2017

### संपादन सलाहकार समिति

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष
श्री अरुण दत्तात्रय नरके अध्यक्ष इंडियन डेरी एसोसिएशन	डा. अनिल कु. श्रीवास्तव अध्यक्ष कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल

### सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह कुलपति बिहार पशु विज्ञान एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय	श्री रामचंद्र चौधरी अध्यक्ष अजमेर जिला दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड
डॉ. इन्द्रजीत सिंह निदेशक केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान	श्री विश्वास चितले मुख्य कार्यकारी अधिकारी चितले डेरी
डॉ. आर. आर. बी. सिंह निदेशक राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान	डॉ. अनूप कालरा कार्यकारी निदेशक आयुर्वेद लिमिटेड

### संपादक मंडल

प्रकाशक श्री नरेश कुमार भनोट	निदेशक सुश्री सीमा सहाय
संपादक डॉ. जगदीप सक्सेना	विज्ञापन व व्यवसाय श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

### संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर-IV,  
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022  
फोन : 011-26179781  
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

## विषय सूची

शुभकामना संदेश 2

अध्यक्ष की बात, आपके साथ 6

मुख्य लेख  
दुधारू गाय-भैंसों के लिए संतुलित  
आहार 10  
पंकज कुमार सिंह एवं चन्द्रमणि



साक्षात्कार  
दूध उत्पादन के साथ प्रसंस्करण  
भी बेहतर बने 14  
दिलीप रथ



सूचना  
बाजार पर नज़र 18



विशेष पहल  
'दुग्ध सरिता' का विमोचन 20



विचार  
समृद्धि के लिए डेरी अपनाएं 23  
आर. एस. खन्ना



सलाह  
गाभिन गाय की बेहतर देखभाल से 26  
अधिक दूध उत्पादन  
निशान्त कुमार, शैलेश कुमार गुप्ता, पंकज  
कुमार जोशी एवं एस. एस. लठवाल



तकनीक  
दूध उत्पादन बढ़ाएं,  
वर्ष भर हरा चारा खिलाएं 29  
राकेश कुमार, उत्तम कुमार एवं हरदेव राम



साझेदारी  
गोकुल माइक्रो प्रशिक्षण केंद्र से 35  
पशुपालकों की उन्नति  
अरुण दत्तात्रय नरके



मौसम  
सर्दियों में पशुओं की देखभाल 38  
राजेन्द्र सिंह



### डिस्कलेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

### मूल्य

एक प्रति : 75 रु.



देवेन्द्र चौधरी  
सचिव

पशुपालन, डेरी एवं मत्स्यपालन विभाग  
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय  
भारत सरकार

## संदेश

**मु**झे यह जानकर प्रसन्नता है कि भारतीय डेयरी संघ (आईडीए) डेयरी सेक्टर में दूध उत्पादकों तथा अन्य पणधारियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हिंदी में एक द्विमासिक पत्रिका 'दुग्ध सरिता' प्रकाशित कर रहा है।

भारत विश्व में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक देश बना हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में डेयरी सेक्टर काफी बढ़ा है। विवेकशील नीतिगत हस्तक्षेप के कारण भारत 2014-15 के 146.31 मिलियन टन के मुकाबले 2015-16 में 155.5 मिलियन टन वार्षिक उत्पादन करके विश्व के दूध उत्पादक देशों में पहले नंबर पर बना हुआ है। इसने 6.28 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। पिछले दस वर्षों के दौरान दूध उत्पादन में औसत वृद्धि लगभग 4.5 प्रतिशत है। डेयरी असंख्य ग्रामीण परिवारों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है और इसने विशेष रूप से महिलाओं, छोटे और सीमांत किसानों की रोजगार तथा आय सृजन के अवसर प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका इच्छित्यार कर ली है।

देश में दूध की औसत प्रति व्यक्ति उपलब्धता 337 ग्राम प्रतिदिन है, जो 2016 के दौरान 302 ग्राम प्रतिदिन की विश्व की औसत से अधिक है। इन प्रशंसनीय उपलब्धियों के बावजूद ऐसी कई कमियां हैं जो वैश्विक बाजार में भारत की उपस्थिति को सीमित करती हैं। गुणवत्ता, साफ-सफाई, संदूषण तथा सामान्य खाद्य सुरक्षा के मुद्दे इस प्रगति के पथ की एक बड़ी बाधा हैं। दूध उत्पादकों में गुणवत्तापूर्ण तथा स्वच्छ दूध उत्पादन, 2020 तक किसानों की आय को दोगुना करने के सरकार के लक्ष्य के अनुरूप उनकी आय को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी नवाचारों के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करके इन मुद्दों को हल किया जा सकता है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी की यह द्विमासिक पत्रिका 'दुग्ध सरिता' डेयरी में लगे दूध उत्पादकों, प्रसंस्करण व्यवसायियों, व्यापारियों तथा अन्य पणधारियों के लिए सूचना के प्रचार-प्रसार तथा आज डेयरी उद्योग को सीमित करने वाले मुद्दों को पूरी सक्रियता से हल करने का एक आदर्श माध्यम बनेगी।

मैं भारतीय डेयरी संघ (आईडीए) के इस प्रयास की सफलता की कामना करता हूं।

(देवेन्द्र चौधरी)



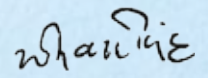
डा. रामेश्वर सिंह  
कुलपति  
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

## संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि इंडियन डेयरी एसोसिएशन द्वारा द्विमासिक हिंदी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन शुरू किया गया है। डेयरी क्षेत्र किसानों को आय, उपभोक्ता को पोषण तथा देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल प्रदान करता है। डेयरी व्यवसाय में मौजूद अपार व्यावसायिक संभावनाओं ने इसके विकास की दर तेज कर दी है। छोटे डेयरी किसानों से लेकर बड़े डेयरी उद्यमी तक देश में दुग्ध क्रांति को सतत् बनाने में योगदान दे रहे हैं। इस आशाजनक परिदृश्य में आवश्यक है कि डेयरी से जुड़ी वैज्ञानिक और विकासात्मक जानकारियों को सभी संबंधितों तक पहुंचाया जाय। विशेष रूप से डेयरी किसानों तक उनकी अपनी भाषा में जानकारियों का प्रसार आवश्यक है।

मेरा विश्वास है यह पत्रिका इस आवश्यकता को पूरा करके देश में दूध उत्पादन और इसके प्रसंस्करण को बल देगी। साथ ही छोटे और सीमांत किसान इसका लाभ उठाकर अपनी आमदनी बढ़ाने में सफल होंगे।

इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं आईडीए को बधाई देता हूं और 'दुग्ध सरिता' की सफलता की कामना करता हूं।

  
(रामेश्वर सिंह)



# इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

## आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्ष: श्री अरुण नरके

उपाध्यक्ष: डॉ. जी.एस. राजोरिया एवं डॉ. सतीश कुलकर्णी

### सदस्य

**चयनित:** डॉ. जी. आर. पाटिल, डॉ. राजा रतिनम, डॉ. आर.एस. खन्ना, श्री अरुण पाटिल, डॉ. के.एस. रामचन्द्र, श्री पार्थिभाई जी. भटोल, श्री एम.पी. एस. चददा, डॉ. जे.वी. पारेख, डॉ. एस. के. कनौजिया, श्री सुधीर कुमार सिंह एवं श्री किरिटी के. मेहता **नामित सदस्य:** श्री अनिमेष बनर्जी, श्री एस.एस. मान, डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, श्री सी.पी. चार्ल्स, श्री सुभाष चंद्र मंडगे, डॉ. ई. रमेश कुमार, डॉ. आर.आर.बी. सिंह एवं श्री संग्राम आर. चौधरी **विशेष आमंत्रित सदस्य:** सुश्री किरण कुमारी एवं श्रीमती स्नेहलता बिपिनदादा कोल्हे

### सम्पादकीय मंडल

**अध्यक्ष:** श्री अरुण नरके; **उपाध्यक्ष:** डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव; **सदस्य:** श्री ए.के. खोसला, डॉ. आर.एम. आचार्य, डॉ. किरण सिंह, डॉ. जी.एस. राजोरिया, डॉ. जी. आर. पाटिल, डॉ. शिव प्रसाद, डॉ. ए.के. सिंह, डॉ. ए.के. त्यागी, **कार्यकारी सम्पादक, आईजेडीएस:** डॉ. आर.के. मलिक **सम्पादक, इंडियन डेरीमैन:** श्रीमती सीमा सहाय, **सम्पादक, दुग्ध सरिता:** डॉ. जगदीप सक्सेना

**मुख्य कार्यालय:** इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर- IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली- 110022, टेलीफोन: 26170781, 26165237, 26165355, फ़ैक्स - 91-11-26174719, ई-मेल: idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

### क्षेत्रीय शाखाएं एवं चैप्टर्स

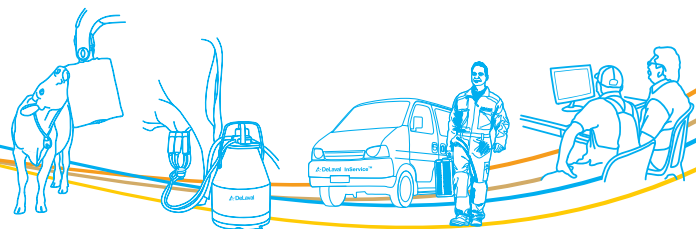
**दक्षिणी क्षेत्र:** श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरु-560 030, फोन न. 080-25710661, फ़ैक्स-080-25710161. **पश्चिम क्षेत्र:** श्री अरुण पाटिल, अध्यक्ष; ए-501, डाइनेस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी-कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई-400059 ई-मेल: arunpatilida@gmail.com **उत्तरी क्षेत्र:** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली-110 022, फोन- 011-26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्र:** डॉ. आर. चट्टोपाध्याय, अध्यक्ष, द्वारा एनडीडीबी, ब्लॉक-डी, के सेक्टर-II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता- 700 091, फोन- 033-23591884-7. **गुजरात राज्य चैप्टर:** डॉ. के. रतिनम, अध्यक्ष; द्वारा एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणद कृषि विश्वविद्यालय, आणद- 388110, गुजरात, ई-मेल: guptahk@rediffmail.com **केरल राज्य चैप्टर:** डॉ. पी. आई. गीवर्गीज, अध्यक्ष, प्रोफेसर एवं प्रमुख तथा पूर्व डीन, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मन्नुथि, त्रिसूर-680651, फोन-0487-2372861, फ़ैक्स-00487-2372855, ई-मेल: idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टर:** श्री ललित कुमार कौशिक, अध्यक्ष, द्वारा जयपुर डेयरी, गांधीनगर रेलवे स्टेशन के पास, जयपुर- 302015, टेलीफोन नं. 9549653400, फ़ैक्स 0141-2711075, ई-मेल: idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टर:** श्री इन्द्रजीत सिंह, अध्यक्ष; निदेशक कार्यालय, डेयरी विकास, एससीओ नं. 1106-07, सेक्टर-22बी, चंडीगढ़ फोन/ फ़ैक्स: 0172-2700055, ई-मेल: director\_dairy@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टर:** श्री एस.के. सिंह, अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, पटना डेयरी कार्यक्रम, वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, फीडर बैलेन्सिंग डेयरी कॉम्प्लेक्स, फुलवारीशरीफ, पटना-01505. ई-मेल: sudhirpdp@yahoo.com **हरियाणा राज्य चैप्टर:** श्री ए.के. शर्मा, अध्यक्ष, (नामित); द्वारा निदेशक, एनडीआरआई, करनाल, 132001. टेलीफोन: 0184-2259002, 2252800. ई-मेल: dir@ndri.res.in **तमिलनाडु राज्य चैप्टर:** डॉ. सी. नरेश कुमार, अध्यक्ष, को/ओ. प्रोफेसर एवं प्रमुख (सेवानिवृत्त), डेयरी विज्ञान विभाग, मद्रास पशुचिकित्सा कॉलेज, चेन्नई-600 007. **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टर:** श्री के. भास्कर रेड्डी, अध्यक्ष; प्रबंध निदेशक, क्रीमलाइन डेयरी प्रॉडक्ट्स लिमिटेड, 6-3-1238/बी/21, आसिफ एवेन्यू, राज भवन रोड, सोमाजीगुड़ा, हैदराबाद-500 082. फोन: 040-23412323, फ़ैक्स: 040-23323353. **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टर:** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष, प्रोफेसर, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005, फोन: 0542-6701774/2368583, फ़ैक्स: 0542-2368009, ई-मेल: dcrai.bhu@gmail.com



# Celebrating journey of years in India

# 25

- Supporting farmers growth
- Providing cow comfort
- Improving farm productivity



## DeLaval Private Limited

A-3, Abhimanshree Society,  
Pashan Road, Pune - 411008, India.  
Tel. +91-20-6721 8200 | Fax +91-20-6721 8222

**Product Information:** [marketing.india@delaval.com](mailto:marketing.india@delaval.com)  
**Website:** [www.delaval.in](http://www.delaval.in)

# अध्यक्ष की बात, आपके साथ

## बहुत याद आते हैं डॉ. कुरियन



प्रिय पाठकों,

मैं उन करोड़ों भारतीयों में से एक हूँ, जो हर साल 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाते समय डॉ. वर्गीज कुरियन को याद करते हैं और सादर नमन भी करते हैं। कृतज्ञ राष्ट्र उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

दरअसल यह तारीख भारत के डेरी इतिहास का स्वर्णिम दिन है, क्योंकि इसी दिन सन् 1921 में कालिकट में डॉ. कुरियन का जन्म हुआ था। दक्षिण भारत के इस छोटे से नगर में किसी ने कल्पना नहीं की थी कि एक दिन यह बालक करोड़ों भारतीयों की खुशहाली का सूत्रधार बनेगा। डॉ. कुरियन ने अपनी अनोखी सूझबूझ, नयी सोच और प्रयासों से छोटे डेरी किसानों को दूध पर मालिकाना हक दिलाया। उन्होंने सन् 1973 में गुजरात कोऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड (अमूल के नाम से विख्यात) की स्थापना करके साबित किया कि दूध के संग्रह और बिक्री को सहकारी रूप से संपन्न करके डेरी किसान दूध की वाजिब कीमत हासिल कर सकते हैं। देश में सहकारी समितियां बनीं और कामयाब हुईं। इस मॉडल की देश के साथ दुनिया भर में सराहना हुई। जल्दी ही दूध सहकारिता एक राष्ट्रव्यापी अभियान में बदल गई और आज करोड़ों डेरी किसान इसका फायदा उठा कर समृद्धि की राह पर आगे बढ़ चले हैं, जिसमें बड़ी तादाद में महिलाएं भी शामिल हैं।

सन् 1965 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने डॉ. कुरियन की नेतृत्व क्षमता को पहचान कर उन्हें नवगठित नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड की कमान सौंप दी। सन् 1998 तक वह इसके अध्यक्ष रहे। इस दौरान उन्होंने देश भर में 'ऑपरेशन फ्लड' के नाम से एक व्यापक अभियान चलाया, जिससे आज भारत को विश्व में सबसे ज्यादा दूध उत्पादन का गौरव हासिल है। इस अभियान ने भारत में श्वेत क्रांति को अंजाम दिया और इसके नायक तथा प्रणेता के रूप में डॉ. कुरियन को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। आनंद मॉडल को अपनाते हुए आज एनडीडीबी द्वारा देश में एक विशाल मिल्क ग्रिड संचालित किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत 96,000 से अधिक डेरी सहकारी समितियां काम कर रही हैं। इस अभियान ने डेरी किसानों को समृद्धि के साथ भारत के करोड़ों नागरिकों को पोषण सुरक्षा का उपहार भी दिया है। देश के नागरिक आज लगभग 340 ग्राम प्रतिदिन की दूध उपलब्धता के साथ गर्व का अनुभव कर रहे हैं।

अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए डॉ. कुरियन ने अपनी कर्मस्थली आणंद में अपने साथियों के साथ मिलकर 'इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट' की स्थापना की। इसका उद्देश्य सहकारी समितियों को प्रबंधन का प्रशिक्षण देना और अनुसंधान सहायता प्रदान करना था। आज हम दुग्ध सहकारी समितियों के काम-काज में आधुनिकता और व्यावसायिकता का जो रूप-रंग



देख रहे हैं, उसका श्रेय डॉ. कुरियन को जाता है। वह सन् 1979 से 2005 तक इसके अध्यक्ष थे।

हमें यह बताते हुए गर्व है कि डॉ. कुरियन ने सन् 1964 से 1965 तक इंडियन डेरी एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में हमारा मार्गदर्शन किया। यह हमारे अतीत का एक यादगार और सुनहरा पल है। इसके बाद भी वह आईडीए की नीतियों, विचारों और कार्यक्रमों के साथ लगातार जुड़े रहे और हमें प्रोत्साहित करते रहे। अनेक अवसरों पर उन्होंने आईडीए द्वारा हर साल आयोजित की जाने वाली डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस को संबोधित किया और आगे बढ़ने की राह दिखाई, सफलता के मंत्र दिये। 'अमूल' की स्वर्ण जयंती के अवसर पर इस कांफ्रेंस को आणंद में आयोजित करने का निमंत्रण देकर उन्होंने आईडीए के साथ अपने संबंधों की प्रगाढ़ता का परिचय दिया। इसके लिए हम सदैव उनके आभारी रहेंगे।

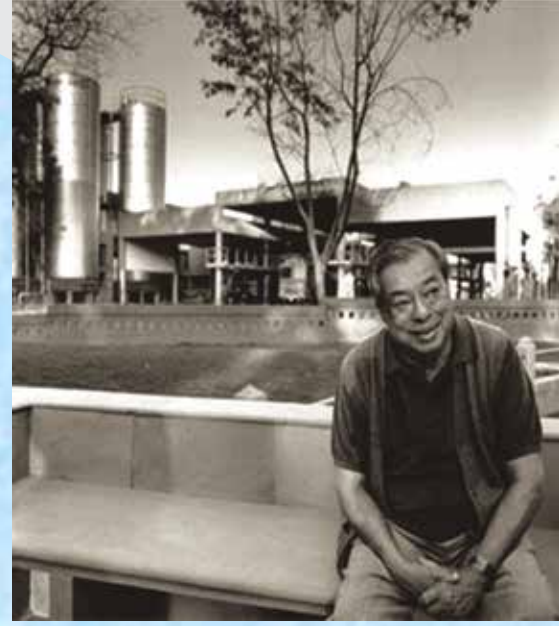
आईडीए और देश के डेरी सेक्टर की ओर से डॉ. कुरियन के योगदान को यथोचित मान-सम्मान देने के लिए आईडीए ने सन् 1991 से 'डॉ. कुरियन अवार्ड' प्रदान करने की परंपरा शुरू की। प्रत्येक दो वर्ष में एक बार दिया जाने वाले इस पुरस्कार को देश में डेरी सेक्टर के सर्वोच्च पुरस्कार के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। भारतीय डेरी उद्योग के विकास में सार्थक और विशिष्ट योगदान देने वालों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप एक स्मृति चिन्ह, प्रशस्तिपत्र और दो लाख रुपये की नकद राशि भेंट की जाती है। डॉ. कुरियन के जन्म दिवस के अवसर पर हर साल 'राष्ट्रीय दुग्ध दिवस' मनाने की संकल्पना भी आईडीए की थी, जिसे संपूर्ण डेरी सेक्टर ने हृदय से स्वीकार करके डॉ. कुरियन का मान बढ़ाया। हम इसके लिए डेरी समाज के आभारी हैं और तहेदिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

आईडीए अब तक कुल 11 डॉ. कुरियन अवार्ड प्रदान कर चुकी है, जिसके माध्यम से 12 डेरी सेवियों को सम्मानित किया जा चुका है। मुझे गर्व है कि इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सूची में मेरा नाम भी शामिल है। अन्य पुरस्कार विजेता इस प्रकार हैं – श्री हरीचंद मेघा डलाया, डॉ. नोशिर नवरोजी दस्तूर, श्री मोतीभाई आर. चौधरी व श्री बाबूभाई चुन्नीलाल भट्ट, डॉ. (कु.) अमृता पटेल, श्री जसवंतलाल सौभाग्यचंद शाह, श्री सिल्वेस्टर दा कुन्हा, श्री एस. के. परमासिवन, श्री मांडव जानकी रामैया, श्री दीपक टिक्कू एवं श्री पारथीभाई गलाबाभाई भटोल।

डॉ. कुरियन के योगदानों को मान्यता देते हुए भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

डॉ. कुरियन को अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों व सम्मानों से भी नवाजा गया। इन सबसे ऊपर वह एक सहृदय व संवेदनशील इंसान थे, जिनके मन में भारत के करोड़ों नागरिकों के लिए प्रेम व स्नेह था।

आइए, हम सब मिलकर डॉ. कुरियन को याद करें, उन्हें नमन करें और उनके बताये रास्ते पर आगे बढ़ने का प्रयास करें।



आपका

(अरुण दत्तात्रय नरके)

# इंडियन डेरी एसोसिएशन

## संस्थागत सदस्य

### बेनीफैक्टर सदस्य

अहमदाबाद जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)  
अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)  
अमृत प्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)  
आयुर्वेद लिमिटेड (दिल्ली)  
आरोहण डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, तंजावुर (तमिलनाडु)  
बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)  
बनासकांठा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)  
बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)  
बेलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसायटी संघ लिमिटेड, बेलगांव (कर्नाटक)  
बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)  
बिहार राज्य दुग्ध सहकारिता संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)  
बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)  
बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)  
ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)  
चंबल डेयरी उत्पाद, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)  
सीपी दुग्ध और खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)  
क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)  
डेयरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
डीएसएम न्यूट्रिशनल प्रोडक्ट्स, मुंबई (महाराष्ट्र)  
डेनफोस इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)  
डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)  
देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद डीयूएसएस लिमिटेड, बेगूसराय (बिहार)  
डोडला डेयरी लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)  
द्वारका मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स लिमिटेड, नवी मुंबई (महाराष्ट्र)  
इली लिली एशिया इंक, बंगलुरु (कर्नाटक)  
फार्मगेट एग्री मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)  
खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)  
फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिस्तेमैटि, आणंद (गुजरात)  
फोंटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
गरिमा मिल्क एंड फूड्स प्रोडक्ट्स लिमिटेड (दिल्ली)  
गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)  
जीईए वेस्टफालिया सेपरेटर (ई) प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
गांधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गांधीनगर (गुजरात)  
गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)  
गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

जीआरबी डेयरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)  
एचसीएल इन्फोसिस्टम्स लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)  
हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)  
हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)  
हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)  
आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)  
इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
आईटीसी फूड्स, बंगलुरु, (कर्नाटक)  
भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)  
जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)  
कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
कस्तूरबा जैव-उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)  
करनाल दुग्ध उत्पाद लिमिटेड (दिल्ली)  
करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)  
कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बंगलुरु (कर्नाटक)  
खैबर एग्री फार्म्स प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)  
खम्बेत कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)  
क्वालिटी डेयरी इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली (दिल्ली)  
कोलेनमेसे या ट्रेडफेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)  
कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)  
लार्सन एंड टूब्रो इन्फोटेक लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
मध्य प्रदेश राज्य सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, भोपाल (मध्य प्रदेश)  
मालाबार क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोझीकोड (केरल)  
मालगंगा डेयरी फार्म, अहमदनगर (महाराष्ट्र)  
मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)  
एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)  
राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, आणंद (गुजरात)  
भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)  
नोवोजाइम्स दक्षिण एशिया प्राइवेट लिमिटेड, बंगलुरु (कर्नाटक)  
नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)  
पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)  
परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)  
पराग दुग्ध खाद्य प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
प्रादेशिक सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

## संस्थागत सदस्य

प्रिया दुग्ध और दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)  
पी पी जी (दिल्ली)  
प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)  
रायचूर बेल्लारी एवं कोपल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)  
राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)  
राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)  
एसआर थोराट दुग्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)  
स्टर्लिंग एग्रो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)  
सिनर्जी एग्रो-टेक प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)  
साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)  
सील्ड एयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
श्राइबर डायनामिक्स डेयरीज लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
सीरप (एसईआरएपी) इंडस्ट्रीज (दिल्ली)  
श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)  
श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)  
श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)  
श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)  
स्टर्न इन्डोडिएन्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)  
सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)  
शिमोगा सहकारी दुग्ध उत्पादक सोसाइटीज संघ लिमिटेड, शिमोगा (कर्नाटक)  
टेट्रा पैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारी संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)  
पटियाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पटियाला (पंजाब)  
पंजाब राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, चंडीगढ़ (पंजाब)  
रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)  
रोपड़ जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)  
संगरूर जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (पंजाब)  
उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)  
उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)  
उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)  
वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)  
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)  
विद्या डेयरी, आणंद (गुजरात)  
विवर्क पशु स्वास्थ्य इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
**वार्षिक सदस्य**  
एबीटी उद्योग, कोयंबटूर (तमिलनाडु)  
एबॉट हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
अमृत खाद्य, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)  
बी.जी. चितले डेयरी, सांगली (महाराष्ट्र)  
कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
क्रीमलाइन डेयरी उत्पाद लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)  
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)  
डीलावेल प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला  
आईसीएल प्रबंधन एवं व्यापार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)  
भारतीय इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)  
ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आणंद (गुजरात)  
जिंदल स्टेनलेस कॉर्पोरेट प्रबंधन सेवा प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
जम्मू व कश्मीर दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड  
जेएमडी सोनिक इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
कौरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, आणंद (गुजरात)  
खैबर एग्रो फार्म प्राइवेट लिमिटेड, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)  
माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)  
मैगनाम नेटलिक प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)  
मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)  
मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)  
मॉडर्न डेयरीज लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)  
ऑटोकम्प्यू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (नई दिल्ली)  
पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)  
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)  
रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)  
रिनैक इंडिया लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)  
सह्याद्री कृषि उत्पाद और डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)  
संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)  
शारदा डेयरी एवं खाद्य उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छत्तीसगढ़)  
साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (दिल्ली)  
सीता राम गोकुल मिल्क्स केटीएम लिमिटेड, काठमांडू (नेपाल)  
शेंदोंग बिहाई मशीनरी कंपनी लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)  
एसपी मणि एंड मोहन डेयरी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (तमिलनाडु)  
शिरिष पॉलीकेम प्राइवेट लिमिटेड, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)  
श्री एडीटिव्स (पी एंड एफ) लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)  
श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)  
श्रीकृष्णा दुग्ध प्राइवेट लिमिटेड, हुबली (कर्नाटक)  
श्रीचक्र दुग्ध उत्पाद एलएलपी (आंध्र प्रदेश)  
सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)  
अंबाला जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (हरियाणा)  
तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)



## दुधारू गाय-भैंसों के लिए संतुलित आहार

पंकज कुमार सिंह एवं चन्द्रमणि

पशु पोषण विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय,  
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, बिहार-800014

आमतौर पर पशुओं को दिए जाने वाले चारे तथा आहार की मात्रा उनकी आवश्यकताओं से कम या अधिक होती है तथा उनके आहार में प्रोटीन, ऊर्जा या खनिज का असंतुलन हो जाता है। बहुत कम किसान अपने पशुओं को रोजाना खनिज मिश्रण और नमक खिलाते हैं, जो खिलाते भी हैं वो 25 से 50 ग्राम ही देते हैं। असंतुलित आहार से पशु दूध कम देता है, उत्पादन लागत अधिक रहती है तथा पशु का स्वास्थ्य और प्रजनन क्षमता भी प्रभावित होती है। इसलिए, किसानों को दुधारू पशुओं के आहार संतुलन पर ध्यान देना जरूरी है।

**सं**तुलित आहार उस भोजन सामग्री को कहते हैं जो किसी भी पशु को 24 घंटे के लिए निर्धारित पोषक तत्वों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पशुओं के जीवन निर्वाह, शारीरिक वृद्धि, उत्पादन एवं प्रजनन हेतु संतुलित आहार की आवश्यकता होती है, इसलिए पशुओं की आहार व्यवस्था उचित ढंग से की जानी चाहिए ताकि

पशु शरीर को सभी आवश्यक पोषक तत्व उचित मात्रा में मिल सकें। संतुलित आहार को सामान्यतः दो श्रेणियों में रखा जा सकता है, जैसे कि निर्वाह आहार एवं उत्पादन आहार। पशु को जो आहार दिया जाता है, उसका कुछ हिस्सा वह अपने शरीर के निर्वाह के लिए प्रयोग करता है जिसे जीवन निर्वाह आहार कहा जाता है। यह पशु की

प्रथम आवश्यकता है। इस आहार का पशुओं के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं पर असर पड़ता है। यहां तक कि विश्राम की अवस्था में भी अपनी विभिन्न शारीरिक क्रियाओं जैसे पाचन, श्वसन, उत्सर्जन, रक्त संचरण, जुगाली आदि को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है जो कि खाद्य पदार्थों में उपस्थित पोषक तत्वों के ऑक्सीकरण से ही मिलती है। अतः चाहे गाय दूध दे रही हो या नहीं, उसे नियमित रूप से निर्धारित संतुलित आहार देना चाहिए। निर्वहन आहार की मात्रा निर्धारित करते समय पशु की आयु एवं शरीर भार को ध्यान में रखना चाहिए। जबकि उत्पादन आहार की मात्रा पशुओं की उत्पादन अवस्था जैसे पशु की शारीरिक वृद्धि, दूध उत्पादन, दूध में वसा की मात्रा, भारवाही पशु द्वारा किए जाने वाले कार्य एवं उसके प्रकार को ध्यान में रखकर निर्धारित करनी चाहिए। अतः पशुओं को आवश्यकतानुसार संतुलित दूध आहार देना चाहिए।

## पशु आहार कैसा हो ?

पशु आहार के मुख्यतया दो घटक होते हैं:

### 1. चारा

दुधारू पशुओं में रूमेन के सुचारू रूप से काम करने एवं दूध में सामान्य वसा प्रतिशत बनाये रखने में चारे का विशेष महत्व होता है। इसलिए अधिक दूध उत्पादन के लिए चारा अधिक से अधिक मात्रा में खिलाना चाहिए। हरे चारे से पोषक तत्व पशुओं को असानी से मिल जाते हैं। हरे चारे में विटामिन की मात्रा भी अधिक होती है और पशु भी इसे चाव से खाते हैं। चारा दो प्रकार के होते हैं :

**सूखा चारा** : इसमें जल की मात्रा 15 प्रतिशत से कम रहती है। सूखी घास, कृषि फसल अवशेष जैसे गेहूँ का भूसा, धान का पुआल, मक्का या ज्वार की कड़बी, अरहर की भूसी आदि। सूखे चारे में हरे चारे की अपेक्षा कम पोषक तत्व होते हैं।

**हरा चारा** : दुधारू पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य एवं अधिक दूध उत्पादन के लिए हरा चारा बहुत आवश्यक है। हरा चारा पौष्टिक तत्वों से भरपूर, स्वादिष्ट, पाचक एवं महंगे

दानों की अपेक्षा सस्ता होता है और इसे अनाज उत्पादन के लिए अनुपयोगी जमीन में आसानी से उगाया जा सकता है। हरा चारा में जल की मात्रा 15 प्रतिशत से लेकर 80 प्रतिशत तक हो सकती है। इससे उचित मात्रा में विटामिन मिलता है। सभी दलहनी एवं गैर-दलहनी चारा, घास, पेड़ के पत्ते आदि इसके अन्तर्गत आते हैं। सोयाबीन, लोबिया, बरसीम, रिजका, ग्वार आदि दलहनी फसले हैं। धान, गेहूँ, जई, ज्वार और विभिन्न घास गैर-दलहनी फसले हैं। अधिक रसीले चारे के साथ थोड़ा सूखा चारा मिलाकर ही पशुओं को खिलाना चाहिए, अन्यथा पशुओं में अधिक गैस बनने से अफरा हो जाता है जो घातक हो सकता है।

## 2. दाना मिश्रण

दाना मिश्रण में दो या दो से अधिक भोज्य पदार्थ होते हैं और पोषक तत्व भी चारे की अपेक्षा अधिक होते हैं। इसमें रेशा की मात्रा 18 प्रतिशत से कम एवं विभिन्न आसानी से पचने योग्य पोषक तत्व भरपूर होते हैं। मक्का, गेहूँ, जौ, जई ज्वार, बाजरा आदि अनाज ऊर्जा के स्रोत हैं और मूंगफली, सोयाबीन, बिनौला, सरसों, अलसी आदि की खली प्रोटीन के स्रोत हैं। दाना मिश्रण में जितने अधिक प्रकार के भोज्य पदार्थ होंगे, वह उतना ही अधिक संतुलित होगा।

### दाना मिश्रण कैसे बनाएं ?

दाना मिश्रण में 18-20 प्रतिशत प्रोटीन तथा 70-75 प्रतिशत कुल पाचन योग्य पदार्थ होने चाहिए। सामान्य रूप से दाना मिश्रण बनाने के लिए एक तिहाई अनाज, जैसे गेहूँ, मक्का, जौ, बाजरा, ज्वार लें, एक तिहाई गेहूँ की चोकर, चावल की भूसी, चने की भूसी व अन्य चूनी लें व एक तिहाई खल जैसे - मूंगफली की, सरसों की, सोयाबीन की, अलसी की लें। इस मिश्रण में 2 प्रतिशत खनिज मिश्रण एवं 1 प्रतिशत नमक भी मिलायें। स्वाद बढ़ाने के लिए 5-10 प्रतिशत गुड़ या शीरा भी मिला सकते हैं। स्थानीय खाद्य स्रोतों को शामिल करने से पशु आहार की लागत काफी कम होगी और लाभ भी बढ़ेगा। स्थानीय स्रोत के चारे-दाने में पोषक तत्वों की अधिकता भी रहती है, विशेष रूप से विटामिन की।

## संतुलित पशु दाना में क्या हो?

**प्रोटीन स्रोत**— विभिन्न प्रकार की खली जैसे, मूंगफली की खली, बिनौले की खली, सोयाबीन की खली, सरसों की खली, सूर्यमुखी की खली, अलसी की खली, मछली का चूर्ण, मीट चूर्ण, ब्लड चूर्ण आदि।

**ऊर्जा के स्रोत**— मुख्यतया सभी अनाज जैसे गेहूँ, मक्का, बाजरा, जौ, जई, चावल की पॉलिश, ग्वार एवं शीरा आदि।

**फसलों के अन्य उत्पाद** — गेहूँ की चोकर, चने की चूरी, चने का छिलका, अरहर की चूरी एवं चावल की चूनी आदि।

**खनिज मिश्रण** — हर्बल पोषक तत्व, डाई कैल्शियम फॉस्फेट, कैल्साइट पाउडर, साधारण नमक, विटामिन-ए तथा डी-3। इनसे हमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, तांबा, लोहा, जस्ता आदि कई महत्वपूर्ण खनिज प्राप्त होते हैं।

**वृद्धि कारक आहार** — प्रोबायोटिक, प्रीबायोटिक एवं हार्मोन आदि।

### खनिज लवण जरूर दें

पशुओं के शरीर में 3-5 प्रतिशत खनिज पदार्थ पाए जाते हैं, जो हड्डियों को मजबूत करने, तंतुओं का विकास करने, पाचन शक्ति बढ़ाने, खून बनाने, दूध उत्पादन, प्रजनन एवं स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। अब तक पशु आहार में 22 खनिज लवणों के महत्व की जानकारी प्राप्त हो चुकी है। कैल्शियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, सल्फर, सोडियम, पोटेशियम, क्लोरीन, आयरन, तांबा, जिंक, मैंगनीज, कोबाल्ट, आयोडीन जैसे खनिज लवण पशुओं के लिए आवश्यक खनिज लवण होते हैं। आवश्यक खनिज लवण पशु शरीर में विभिन्न तरीके से कार्य करते हैं। कैल्शियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम हड्डी तथा दांतों के



हरा चारा बढ़ाये दूध उत्पादन

निर्माण में सहायक होते हैं। कैल्शियम एवं फॉस्फोरस की

कमी से बच्चों में रिकेट्स एवं व्यस्कों में ऑस्टोमेलेशिया नाम की बीमारी हो जाती है। दुधारु पशुओं में ब्याने के बाद कैल्शियम की कमी से मिल्क फीवर हो जाता है। इसलिए दुधारु पशुओं को पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम अवश्य देना चाहिए। चोकर, खली, संक्रमण रहित हड्डी का चूर्ण एवं डाइकैल्शियम फास्फेट इत्यादि कैल्शियम एवं फॉस्फोरस के प्रमुख स्रोत हैं। पशु आहार में कैल्शियम एवं फॉस्फोरस का अनुपात 2:1 होना चाहिए। कैल्शियम एवं फॉस्फोरस की कमी से पशुओं की प्रजनन क्षमता कम हो जाती है एवं मादा बांझपन का शिकार हो जाती है। फॉस्फोरस की कमी के कारण पशुओं में भूख कम हो जाती है जिसे पाइका कहते हैं। पाइका से ग्रसित पशु असामान्य पदार्थ जैसे चमड़ा, पत्थर, कूड़ा-करकट, कपड़ा आदि न खाने वाली चीजों को खाने लगता है। रोगी पशु हड्डी चबाने में बहुत रुचि लेता है। यदि हड्डी संक्रमित होती है तो पशु की विषाक्तता होने से मृत्यु भी हो सकती है।

### दुधारु गायों एवं भैंसों की आहार व्यवस्था

गाय का औसत भार लगभग 350 किलोग्राम से 450 किलोग्राम और भैंस का औसत भार लगभग 500 किलोग्राम होता है। गायों के दूध में 3.75-5.0 प्रतिशत व भैंस में 6-7 प्रतिशत वसा होती है। दूध देने वाले पशुओं को कुल आहार उसके शरीर की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति, गर्भकाल, दूध उत्पादन, वसा प्रतिशत के आधार पर

### गायों की दैनिक आहार आवश्यकता (किग्रा., प्रति दिन)

पशु वर्ग	सूखा चारा	हरा चारा	दाना मिश्रण
5.0 लीटर तक दूध देने वाली	4-6	25-30	1.5-2.0
6.0 से 10.0 लीटर दूध देने वाली	4-6	25-30	3.0-4.0
11.0 से 15.0 लीटर दूध देने वाली	4-6	30-35	5.0-6.0
16.0 से 20.0 लीटर दूध देने वाली	4-6	40-45	6.0-8.0

### भैंसों की दैनिक आहार आवश्यकता (किग्रा., प्रति दिन)

पशु वर्ग	सूखा चारा	हरा चारा	दाना मिश्रण
5.0 लीटर तक दूध देने वाली	3.0-4.0	30.0-35.0	1.0-1.5
6.0 से 10.0 लीटर दूध देने वाली	5.0-6.0	35.0-40.0	3.5-4.5
11.0 से 15.0 लीटर दूध देने वाली	5.0-6.0	35.0-40.0	4.5-6.0
16.0 से 20.0 लीटर दूध देने वाली	5.0-6.0	40.0-50.0	6.0-8.0

देते हैं। दूध देने वाली गाय व भैंस के आहार की गणना करने के लिए कुछ खास बातों का ध्यान रखना चाहिए जैसे उम्र, शरीर भार, ब्यांत संख्या, दैनिक दुग्ध उत्पादन, दूध में वसा की मात्रा, जलवायु तथा तापमान, उपलब्ध दाना, चारा, सूखा चारा की उपलब्धता एवं पौष्टिकता।

सामान्य पशुओं को उसके शारीरिक भार के 2-3 प्रतिशत के लगभग शुष्क पदार्थ देना चाहिए। भैंस को शारीरिक भार के 2.5-3.0 प्रतिशत के बराबर शुष्क पदार्थ की आवश्यकता होती है। इस शुष्क पदार्थ का 2/3 भाग मोटा चारा या रफेज से तथा 1/3 भाग दाने से पूरा करना चाहिए। मोटा चारे में 2/3 भाग भूसा तथा 1/3 भाग हरा चारा दे सकते हैं। औसतन एक ब्यस्क पशु (गाय/भैंस) को 4-6 किलोग्राम सूखा चारा एवं 1.0-2.0 किलोग्राम दाना का मिश्रण जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक है।

1.0 किलोग्राम दाना मिश्रण प्रति 2.5 किलोग्राम दूध उत्पादन के लिए निर्वहन आवश्यकता के अतिरिक्त देना चाहिए। संकर नस्ल के गायों एवं भैंसों के लिए प्रति दो किलो दूध उत्पादन पर एक किलो दाने का मिश्रण खिलाना चाहिए। गाय-भैंस को गर्भकाल के अंतिम तीन माह के दौरान 1-2 किलोग्राम अतिरिक्त दाना देना चाहिए। इससे नवजात बाछी स्वस्थ एवं गाय का दूध उत्पादन भी अधिक रहता है। अधिक दूध उत्पादन देने वाले पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ दाना मिश्रण और अधिक बढ़ाना पड़ता है। पशुओं को यथासंभव पूरे वर्ष भर चारा मिलना चाहिए ताकि उनकी विटामिन-ए की आवश्यकता पूरी होती रहे। साथ ही आहार में नमक व खनिज लवण भी देना आवश्यक होता है तथा स्वच्छ पानी भी लगातार देना चाहिए। इस प्रकार आहार देने पर ही उनसे पूरा उत्पादन मिल सकता है। ■

## ‘दूध उत्पादन के साथ प्रसंस्करण भी बेहतर बने’



श्री दिलीप रथ

अध्यक्ष, नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड

नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड, एनडीडीबी, देश के डेरी सेक्टर की अग्रणी और प्रतिष्ठित संस्था है। आर्थिक सहायता तथा तकनीकी सशक्तिकरण के जरिये इसने डेरी क्षेत्र के विकास को मजबूत बनाया है और पशुपालकों की सामाजिक-आर्थिक प्रगति में अहम भूमिका निभायी है। एनडीडीबी ने अपनी अनेक योजनाओं के माध्यम से दूध उत्पादकों के सहकारी संघों को बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार किया है। साथ ही इसने डेरी पशुओं और पशुपालकों के कल्याण के लिए तैयार की गई राष्ट्रीय नीतियों को जमीनी स्तर पर लागू करने में मुख्य भूमिका निभायी है। एनडीडीबी की गतिविधियां देश में सहकारी सिद्धांतों और नीतियों को सुदृढ़ता प्रदान कर रहे हैं। एनडीडीबी के कार्यक्रमों, योजनाओं और नीतियों को अपने पाठकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से हमने इसके अध्यक्ष श्री दिलीप रथ से ई-मेल साक्षात्कार किया। प्रस्तुत हैं इसके प्रमुख अंश।

—संपादक

**दुग्ध सरिता :** एनडीडीबी के अध्यक्ष के रूप में आप भारतीय डेरी सेक्टर के विकास से संबंधित किन मुख्य चुनौतियों का सामना कर रहे हैं ?

**दिलीप रथ :** भारत में अनुमानतः सात करोड़ से अधिक दूध उत्पादक हैं तथा देश भर में व्यापक रूप से फैले हुए हैं। परन्तु, दूध संकलन या संग्रह प्रणालियों के माध्यम से किफायती तरीके से बाजार की पहुंच उपलब्ध कराने, व्यावहारिक दूध संग्रह कार्यविधियों को स्थापित करने तथा परिवहन हेतु प्रत्येक ग्राम समिति अथवा संकलन केन्द्र में न्यूनतम मात्रा में दूध का संकलन करने की आवश्यकता होती है। प्रत्येक संकलन केंद्र में दूध की पर्याप्त मात्रा में कमी होने पर अधिक गांवों को शामिल करना चुनौतीपूर्ण होता है। इसके अतिरिक्त, सहायक बुनियादी ढांचे जैसे कि सभी मौसम में काम आने वाली भरोसेमंद सड़कें और

नियमित बिजली की उपलब्धता जैसी समस्याएं भी मौजूद हैं। हमने यह भी देखा है कि सीमित संसाधनों वाले या अलाभकारी गांवों को केवल बाजार उपलब्ध करा देने से दूध के उत्पादन एवं उत्पादकता को अपने आप ही प्रोत्साहन मिलने लगता है। इस प्रकार आरम्भिक चरणों में आर्थिक सहायता (सब्सिडी) से ग्राम स्तरीय संकलन में उचित विस्तार होगा। इसलिए डेरी विकास में पिछड़े जिलों में पर्याप्त अनुदान तथा बुनियादी ढांचे में सुधार की आवश्यकता है।

पशुओं की बड़ी संख्या को देखते हुए रोगों के नियंत्रण के लिए राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों का क्रियान्वयन एक महत्वपूर्ण चुनौती है, क्योंकि इसमें समयबद्ध तरीके से सभी पशुओं के टीकाकरण के लिए सरकार द्वारा वृहद स्तर पर संसाधनों की आवश्यकता होती है। राज्य सरकारों की वित्तीय बाधाओं के कारण, टीकाकरण में देरी होती है जो रोग नियंत्रण



कार्यक्रम की संभावनाओं को प्रभावित कर सकती है। पहले की तरह ही, केंद्र सरकार द्वारा रोग नियंत्रण को पूर्ण वित्त पोषण प्रदान किया जा सकता है।

हमारे अधिकांश दूध उत्पादक छोटे पशुपालक हैं, जिनके पास एक से दो पशु होते हैं तथा संसाधन सीमित होते हैं। खाद्य सुरक्षा तथा गुणवत्ता के कड़े मानकों के चलते उन्नत प्रक्रियाओं को अपनाने से लागत में वृद्धि होती है जो एक चुनौती है। गांवों के स्तर पर दूध शीतलन सुविधाओं के लिए बुनियादी ढांचे में सहायता तथा उत्पादक जागरूकता कार्यक्रमों के लिए अतिरिक्त अनुदान राशि से इस समस्या से निपटने में सहायता मिलेगी।

कई डेरी सहकारिता समितियां कमजोर प्रबंधन, सीमित स्वायत्ता, अपर्याप्त व्यवसायिकता तथा कमजोर वित्तीय क्षमता से संबंधित समस्याओं से जूझ रही हैं। इस कारण दूध व्यवसाय में वे अपने सदस्यों के हितों की रक्षा बेहतर ढंग से नहीं कर पातीं। सहकारिता कानून में, संविधान के 97वें संशोधन के अनुसार संशोधन करने से, सहकारिताओं के संचालन के मामलों से निपटने में मदद मिलेगी।

दूध उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का संभावित प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव भी एक प्रमुख चुनौती खड़ी करेगी, जिसके लिए हमें देशी नस्ल के पशुओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता है क्योंकि वे पर्यावरण अनुकूल होते हैं।

बाजार में आपूर्ति तथा मांग में होने वाले छोटे-छोटे बदलाव से संबंधित चुनौतियां भी आ जाती हैं, जिससे वित्तीय क्षमता पर प्रभाव के साथ ही मूल्यों में व्यापक अंतर आ सकता है। घरेलू उत्पादन तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए नीतियों के संयोजन द्वारा इन परिस्थितियों को प्रबंधित करने की आवश्यकता है।

तकनीकी में तेजी से हो रहे बदलावों से उत्पादन तथा विपणन की मौजूदा प्रणालियों में व्यवधान हो सकता है। उत्पादक संस्थाओं को अपनी समस्याओं को हल करने वाली प्रणालियों का पूर्वानुमान करने तथा उन्हें विकसित करने की आवश्यकता है ताकि इनके प्रतिकूल प्रभावों को टाला जा सके।

**दुग्ध सरिता : भारत में डेरी सेक्टर के विकास को जारी रखने के लिए एनडीडीबी की क्या मुख्य योजनाएं तथा पहलें हैं ?**

**दिलीप रथ :** डेरी सेक्टर के विकास के लिए एनडीडीबी, वर्तमान में राष्ट्रीय डेरी योजना चरण-। (एनडीपी-।) को कार्यान्वित कर रही है। भारत सरकार ने डेरी प्रसंस्करण एवं बुनियादी विकास निधि (डीएडीएफ) योजना को भी हाल में अनुमोदन प्रदान किया है, जिसे एनसीडीसी के साथ एनडीडीबी द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा। जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जीका) द्वारा बुनियादी ढांचे में वित्त पोषण के लिए एनडीडीबी ने एक प्रस्ताव भी तैयार किया है।

राष्ट्रीय डेरी योजना चरण-। (एनडीपी-।) वैज्ञानिक ढंग से नियोजित और बहु राज्यीय पहल है तथा यह 2011-12 से 2018-19 तक की अवधि के लिए अंतिम कार्यान्वयन एजेंसियों (ईआईए) के नेटवर्क के जरिए राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। एनडीपी-। के दो उद्देश्य हैं। पहला, दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाना तथा इसके द्वारा दूध की तेजी से बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए दूध उत्पादन में वृद्धि करना और दूसरा, ग्रामीण दूध उत्पादकों को संगठित दूध प्रसंस्करण सेक्टर की व्यापक पहुंच उपलब्ध कराना।

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने ग्राम स्तरीय उत्पादक संस्थाओं की स्थापना के जरिए सहकारिताओं के विस्तार में वृद्धि करने तथा ग्राम स्तर पर इलेक्ट्रॉनिक दूध परीक्षण उपकरण तथा दूध को ठंडा करने के बुनियादी ढांचे को उपलब्ध कराकर इन संस्थाओं को मजबूत बनाने का विचार किया है। सहकारिताओं को प्रभावी व्यवसाय संचालन के लिए एकीकृत आईसीटी प्रणाली से सुसज्जित करने तथा प्रसंस्करण एवं विपणन हेतु बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। इस संबंध में, ओडीए ऋण सहायता के लिए भारत सरकार के द्वारा एक प्रस्ताव जीका को प्रस्तुत किया गया है।

## डीआईडीएफ के अनेक फायदे

भारत सरकार ने 'डेरी प्रसंस्करण एवं बुनियादी ढांचा विकास निधि (डीआईडीएफ) योजना' को अनुमोदन प्रदान किया है, जिसका कुल परिव्यय लगभग रु.10,000 करोड़ है। इसमें से रु. 8000 करोड़ दूध सहकारिताओं/ दूध उत्पादक कंपनियों को कम ब्याज दर (6.5% प्रतिवर्ष) पर ऋण के रूप में उपलब्ध कराया जाएगा।

यह निधि ग्राम स्तर पर दूध को टंडा करने (चिलिंग) के बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के साथ ही नए डेरी प्रसंस्करण, दूध को सुखाने तथा मूल्य वर्धित उत्पादों की निर्माण सुविधाओं के आधुनिकीकरण अथवा स्थापना हेतु उपलब्ध होगी। यह योजना एनडीडीबी तथा एनसीडीसी द्वारा कार्यान्वित की जाएगी। नाबार्ड बाजार से पूंजी प्राप्त करेगी तथा दूध सहकारिताओं को आगे ऋण देने के लिए एनडीडीबी/एनसीडीसी को हस्तांतरित करेगी। कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराने के लिए, डीआईडीएफ, भारत सरकार ब्याज आर्थिक सहायता उपलब्ध कराएगी। सभी दूध सहकारिताएं इस योजना का लाभ उठा सकती हैं।

**दुग्ध सरिता : छोटे किसानों की आय में दोगुनी वृद्धि करने के राष्ट्रीय मिशन में एनडीडीबी किस प्रकार योगदान दे रही है तथा उसमें आप कहां तक सफल रहे हैं ?**

**दिलीप रथ :** किसानों की आय को दोगुना करने के लिए भारत सरकार ने हाल ही में एक सात सूत्री रणनीति की शुरुआत की है, जिसमें उत्पादन में वृद्धि, उत्पादक सामग्री का प्रभावी उपयोग, कटाई के बाद होने वाली हानियों में कमी, मूल्य वर्धन, विपणन में सुधार, जोखिम में कमी तथा सहायक गतिविधियों जैसे कि डेरी, मधुमक्खी पालन इत्यादि को बढ़ावा देना शामिल हैं।

इनमें से कई उपाय डेरी विकास के लिए एनडीपी तथा डीआईडीएफ जैसे कार्यक्रमों/योजनाओं के एक भाग के रूप में किए जा रहे हैं, जिन्हें एनडीडीबी द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। उत्पादन में वृद्धि करने के लिए पशु पोषण हेतु उन्नत प्रक्रियाओं के साथ उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांडों के वीर्य का प्रयोग करके तथा कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से आनुवंशिक प्रगति में तेजी लाकर दुधारु पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि की जाएगी। उत्पादक सामग्री के प्रभावी उपयोग के लिए आहार संतुलन कार्यक्रम को कार्यान्वित किया जा रहा है ताकि डेरी किसानों को संतुलित आहार खिलाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। इससे किसानों को कम आहार लागत पर उत्पादन

में वृद्धि करने में सहायता मिलेगी। मूल्य श्रृंखला में होने वाली हानियों को कम करने के लिए बल्क मिल्क कूलरों के नियोजन का कार्य जारी है। जिससे हैंडलिंग में हानि/ नुकसान को कम करने में सहायता मिलेगी।

बाजार की पहुंच उपलब्ध कराकर ग्राम स्तर पर कोल्ड चेन के साथ दूध प्रसंस्करण क्षमता के विस्तार एवं आधुनिकीकरण से उत्पादक संस्थाएं अधिक मात्रा में दूध को संभालने में सक्षम होंगी। मूल्य वर्धित दूध उत्पादों की उत्पादन सुविधाओं की स्थापना एवं विस्तार हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। उत्पादन संबंधी जोखिम को कम करने के लिए देशी नस्लों की आनुवंशिक क्षमता के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सहायता उपलब्ध कराई जा रही है क्योंकि ये नस्लें पर्यावरण अनुकूल होती हैं तथा इनमें रोग प्रतिरोधकता होती है।

विपणन में सुधार के लिए उत्पादक संस्थाओं की कवरेज बढ़ायी जा रही है, जिससे मात्रा तथा गुणवत्ता आधारित मूल्य निर्धारण की निष्पक्ष एवं पारदर्शी प्रणाली उपलब्ध होगी। मापन तथा परीक्षण संबंधी उपकरणों के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। विविधीकरण के लिए, डेरी के साथ मधुमक्खी पालन की गतिविधियों को भी शामिल किया गया है। जिससे उत्पादकों की आय में वृद्धि करने में सहायता मिलेगी।



केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने जारी किया एनडीडीबी का क्वालिटी मार्क

**दुग्ध सरिता : भारत में डेरी को एक लाभकारी उद्यम के रूप में विकसित एवं स्थापित करने के लिए एनडीडीबी ने क्या प्रयास किए हैं ?**

**दिलीप रथ :** डेरी को एक लाभकारी उद्यम के रूप में विकसित एवं स्थापित करने में सहायता देने के लिए एनडीडीबी ने कई गतिविधियों को शामिल किया है जैसे, उत्पादकता में वृद्धि के लिए उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांडों के वीर्य का इस्तेमाल करके कृत्रिम गर्भाधान (एआई) द्वारा पशुओं की आनुवंशिक क्षमता में वृद्धि करना और आहार संतुलन द्वारा पोषण में सुधार करना तथा रोगों के विपरीत प्रभाव को कम करना। व्यापक बाजार की पहुंच द्वारा बेहतर मूल्य प्राप्त करने के लिए उत्पादकों को सक्षम बनाने के लिए उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं की कवरेज में विस्तार किया जा रहा है तथा दूध को ठंडा करने (चिलिंग), प्रसंस्करण की क्षमताओं तथा मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन में भी वृद्धि की जा रही है।

**दुग्ध सरिता : दुग्ध सरिता के माध्यम से डेरी किसानों तथा डेरी उद्यमियों को आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?**

**दिलीप रथ :** जनसंख्या एवं आय में वृद्धि, शहरीकरण में वृद्धि तथा आहार आदतों में बदलाव आदि के कारण आने वाले वर्षों में दूध एवं दूध उत्पादों की मांग बढ़ने की संभावना है।

दूध की मांग में होने वाली संभावित वृद्धि को घरेलू उत्पादन, दूध उत्पादकों, प्रसंस्करण कर्ताओं तथा डेरी व्यवसाय के व्यापक अवसरों वाले अन्य हितधारकों से मुख्यतः पूरा करने की जरूरत है। परंतु दूध उत्पादकों को न्यूनतम संभावित लागत पर भी दूध उत्पादन करना अनिवार्य है। उत्पादकों को निम्नलिखित के लिए अवश्य प्रोत्साहित किया जाए तथा सहायता प्रदान की जाए:

- उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांडों के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान (एआई) द्वारा उनके पशुओं की आनुवंशिक क्षमता में सुधार लाना।
- आहार का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए पशुओं को खिलाए जाने वाले आहार को संतुलित करना।
- दूध के उत्पादन तथा हैंडलिंग में सुरक्षित तथा स्वास्थ्यकर प्रक्रियाओं को अपनाना।
- दूध उत्पादों की बिक्री के लिए नियमित तौर पर उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं की सेवाओं का इस्तेमाल करना।
- उत्पादक संस्थाओं में उनके प्रतिनिधियों को संचालन संबंधी श्रेष्ठ प्रक्रियाओं एवं उच्च मानकों का पालन करने के लिए प्रेरित करना।

## बाज़ार पर नज़र

दुग्ध  
उत्पाद

## थोक मूल्य

## स्किमड मिलक पाउडर

ब्रांड	मूल्य प्रति कि.ग्रा.
गोकुल	200.00
कृष्णा	—
मधुसूदन	205.00
सागर	280.00
सौरभ	225.00

खुदरा मूल्य  
(टैक्स सहित)

## स्किमड मिलक पाउडर

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (₹.)
अनिक	500 ग्रा. पाउच	195.00
गोकुल	1 कि.ग्रा. पाउच	340.00
मधुसूदन	1 कि.ग्रा. पाउच	300.00
सागर	500 ग्रा. पाउच	150.00
वर्का	1 कि.ग्रा. पाउच	270.00

## शिशु दूध पाउडर

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (₹.)
अमूल स्प्रे	500 ग्राम टिन	182.00
अमूल स्प्रे	1 कि.ग्रा.	350.00
लेक्टोजेन I	400 ग्रा. रीफिल	—

दुग्ध उत्पादों के चुने हुए राष्ट्रीय ब्रांडों का मूल्य निम्नलिखित है। साथ ही थोक एवं खुदरा मूल्य भी अलग बताए गए हैं।

स्रोत: गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ, दिल्ली एवं कुछ ब्रांडों के विक्रय कार्यालय से प्राप्त सूचना। दिए गए मूल्य 23 अक्टूबर, 2017 के हैं।



## मक्खन

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (₹.)
अमूल	500 ग्रा.	225.00
डीएमएस	500 ग्रा.	175.00
गोकुल	500 ग्रा.	225.00
मदर डेयरी	500 ग्रा.	204.00
वीटा	500 ग्रा.	207.00
वर्का	500 ग्रा.	220.00

## घी

ब्रांड	पैक आकार	एमआरपी (₹.)
अमूल	905 ग्रा. (रीफिल)	505.00
अनिक	1 ली. (सीटीएन)	530.00
गोकुल	1 ली. (पॉलीपैक)	520.00
डीएमएस	1 ली. (पॉलीपैक)	400.00
मधुसूदन	1 ली. (पॉलीपैक)	500.00
मदर डेयरी	902 ग्रा. (रीफिल)	550.00
वर्का	1 ली. (मोनोपैक)	460.00
वीटा	1 ली. (मोनोपैक)	503.00
पतंजलि	1 ली. (पॉलीपैक)	560.00



## 46वीं डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस (फरवरी 8-10, 2018)

### आमंत्रण

प्रिय डेरी बंधुओं,

इंडियन डेरी एसोसिएशन (दक्षिण क्षेत्र) को 46वीं वार्षिक डेरी इंडस्ट्री कांफ्रेंस (डीआईसी) में आपको निमंत्रित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। डीआईसी का आयोजन 8 से 10 फरवरी, 2018 को अंगमली, कोच्चि, केरल में किया जा रहा है।

पिछले दो दशकों से दूध उत्पादन में भारत का पहला स्थान बना हुआ है और प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित आवश्यकता से अधिक है, यानी हमने दूध में आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है। यह उत्पादन हमें पशुओं की विशाल संख्या से प्राप्त होता है, जिनका पालन छोटे और सीमांत किसानों द्वारा कम संसाधनों व निवेश से किया जाता है। इसलिए इनकी प्रति पशु उत्पादकता भी कम होती है। इसके अलावा बढ़ाते शहरीकरण के कारण घटती भूमि से चारे और आहार की उपलब्धता भी कम होती जा रही है। यही समय है जब हमें बेहतर पशु प्रबंध उपायों को अपनाकर पशुओं की उत्पादकता बढ़ते हुए दूध उत्पादन की कुशलता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। कुछ अन्य उपाय भी अपनाये जाने चाहिए, जैसे गांव से ग्राहक तक उपयुक्त कोल्ड चेन सुविधाओं की स्थापना, प्रभावी नियोजित प्रबंधन विधियों को अपनाकर प्रसंस्करण की लागत को कम करना, दूध उत्पादों की गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार सुधारना, मूल्यवर्धन को बढ़ावा देना और विपणन में नये सुधार करना। इससे डेरी उद्योग में एक नई गतिशीलता आएगी और निर्यात के अवसर भी बढ़ेंगे। इस परिदृश्य में 46वीं डीआईसी का आयोजन इसकी मुख्य्य थीम 'डेरी : सफिशिएंसी टू एफिशिएंसी' के दायरे में किया जा रहा है। इस कांफ्रेंस में भारतीय डेरी सेक्टर में निर्धारित मानदंडों के अनुसार कुशलता बढ़ाने की नीतियों पर गहन चर्चाएं आयोजित की जाएंगी।

डेरी बंधुओं, 46वीं डीआईसी आपको अन्य प्रतिभागियों के साथ विचार-विमर्श, ज्ञान के आदान-प्रदान और जानकारी की साझेदारी का अवसर प्रदान करेगी। प्रतिभागियों को अपने अनुसंधान परिणामों और विचारों को प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा, जिससे वे डेरी क्षेत्र में सतत विकास में अपना योगदान दे सकेंगे। कांफ्रेंस के अंतर्गत डेरी और इससे जुड़े अन्य क्षेत्रों में विभिन्न प्रौद्योगिकी विकासों को दर्शाया जाएगा, जैसे दूध उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, दूध उत्पादों का उत्पादन, व्यर्थ प्रबंध और ऊर्जा का संरक्षण आदि। इसके साथ ही डेरी किसानों, वैज्ञानिकों, उद्योगों और अन्य संबंधितों के योगदान से डेरी सेक्टर के सतत विकास का रोडमैप भी तैयार करने का प्रयास होगा।

कांफ्रेंस के साथ आयोजित की जाने वाली डेरी एक्सपो में दूध उत्पादन, प्रसंस्करण, चारा और आहार, पैकेजिंग, उत्पाद निर्माण और ऊर्जा संरक्षण जैसे अनेक क्षेत्रों में हुए तकनीकी विकास को प्रदर्शित किया जाएगा। साथ ही एक 'ई-पोस्टर' सत्र का आयोजन भी किया जाएगा, जिसमें नवीनतम अनुसंधानों की जानकारी होगी।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व केरल में केवल एक बार डीआईसी का आयोजन हुआ है - 1988 में 23वीं डीआईसी। आयोजकों द्वारा इस अवसर को अविस्मरणीय बनाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। ईश्वर के अपने देश में आकर आप निश्चित रूप से प्रसन्न व आनंदित होंगे।

एक बार पुनः हम केरल में आयोजित होने वाली इस कांफ्रेंस में आपकी सक्रिय और अभूतपूर्व भागीदारी की अपेक्षा करते हैं और आपको निमंत्रित करते हैं। इसके बारे में विस्तृत जानकारी [www.46dia.com](http://www.46dia.com) पर उपलब्ध है और 'इंडियन डेरीमैन' के आगामी अंकों में प्रकाशित भी की जाएगी। कांफ्रेंस का कर्टन रेज़र वेबसाइट पर उपलब्ध है और इसे आप यू-ट्यूब, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि पर भी देख सकते हैं।

इस संबंध में आप सभी पत्राचार इस पते पर कर सकते हैं - कांफ्रेंस सचिवालय, इंडियन डेरी एसोसिएशन (केरल चैप्टर), कॉलेज ऑफ डेरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी अन्नुथी, थिसूर - 680651। ई-मेल आईडी - [46dickerala@gmail.com](mailto:46dickerala@gmail.com)/[idakeralachapter@gmail.com](mailto:idakeralachapter@gmail.com)।

सादर अभिवादन सहित,

(सी. पी. चार्ल्स)  
अध्यक्ष  
आईडीए (दक्षिण क्षेत्र)

(अरुण नरके)  
अध्यक्ष  
इंडियन डेरी एसोसिएशन

# ‘दुग्ध सरिता’ का विमोचन

बीते 9 सितंबर, 2017 का दिन इंडियन डेरी एसोसिएशन के लिए विशेष और यादगार रहा। इस दिन आईडीए द्वारा प्रकाशित नयी हिंदी द्विमासिक पत्रिका ‘दुग्ध सरिता’ का विमोचन आईडीए के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में संपन्न हुआ। पत्रिका का विमोचन करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि एवं भारत सरकार के पशुपालन आयुक्त श्री सुरेश एस. होन्न्प्पागोल ने आईडीए की इस पहल की सराहना की और उम्मीद जताई कि यह पत्रिका देश के डेरी किसानों तक नई जानकारियां पहुंचाकर उनकी आमदनी बढ़ाने में सहायक होगी।

इस अवसर पर डा.ए.के.श्रीवास्तव, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (भाकृअनुप) ने माननीय अतिथि के रूप में पत्रिका की संकल्पना और सामग्री की प्रशंसा की तथा इसे किसानों की आमदनी दुगुनी करने के लक्ष्य में सहायक बताया।

आईडीए के अध्यक्ष श्री अरुण दत्तात्रय नरके ने पत्रिका शुरू करने की सोच के बारे में बताते हुए कहा कि इसका उद्देश्य डेरी किसानों, खासतौर से छोटे और सीमांत किसानों की आर्थिक दशा में सुधार करना और डेरी व्यवसाय का विकास करना है।

पत्रिका के संपादन मंडल के सदस्य श्री नरेश कुमार भनोट, सुश्री सीमा सहाय, डॉ. जगदीप सक्सेना और श्री नरेंद्र कुमार पांडेय ने पत्रिका की उपयोगिता और संकल्पना के बारे में विस्तार से बताया और सभी से पत्रिका को सफल बनाने में योगदान करने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर डेरी क्षेत्र के अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों ने उपस्थित होकर समारोह की गरिमा बढ़ाई। इनमें प्रमुख हैं - डॉ.आर.एम.आचार्या, डॉ.जी.एस.राजौरिया, डॉ.आर.आर.बी. सिंह, डॉ.आर.एस.खन्ना, डॉ.शिव प्रसाद किमोठी, डॉ.जी.आर.पाटिल, श्री रामचंद्र चौधरी और डॉ.श्याम भास्कर।

मीडिया ने समारोह की कवरेज करते हुए पत्रिका की प्रशंसा व सराहना की।





मुख्य अतिथि (बाएं) और माननीय अतिथि (दाएं) द्वारा संबोधन



यादगार पल



आईडीए के अध्यक्ष द्वारा स्वागत भाषण

## 'डेयरी उद्योग से अपनी आय दोगुनी कर सकते हैं किसान'

जागरण संवाददाता, चौकिली दिल्ली: खेती के साथ डेयरी उद्योग अपनाकर किसान अपनी आम देखभाल कर सकते हैं। दुग्धरूपा पशुओं के गोबर से प्राण खाद से फसल उत्पादन भी बढ़ सकता है। यह कहना है केंद्र सरकार के पशुपालन अड्डा डॉ. सुरेश प्रसाद होन्गवाले ने। यह आरके प्रेम सिन्हा इंडियन डेयरी एरबीट्रेशन (आईडीए) मुख्यालय में द्विमासिक हिंदी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' के विमोचन के अवसर पर जारी मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

इस मौके पर पत्रिका के संपादक डॉ. जगदीश सक्सेना ने कहा कि पत्रिका में 'मेटनरी राइटिंग', 'फसल डेयरी उद्योगों' व 'नियंत्रणों के लेख' सतत भाव में प्रकाशित होंगे ताकि किसान इसका लाभ उठा सकें। आईडीए, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के अध्यक्ष डॉ. एके श्रीवास्तव ने कहा कि



आईडीए भवन में दुग्ध सरिता पत्रिका का विमोचन करते अतिथि • आकाश

एक दशक से भारत विश्व में दुग्ध उत्पादन के शिखर पर है। भारत में सालाना कुल 160 मिलियन टन में से 70 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन छोटे व सीमांत किसान करते हैं। अब उन्हें हिंदी में अपने उद्योग की लेटेस्ट जानकारी मिल सकती है। आईडीए के अध्यक्ष अरुण दत्तात्रेय नरके ने कहा कि प्रशिक्षण लेकर

लोकप्रिय राष्ट्रीय समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' में समारोह की कवरेज

दुग्ध डेयरी उद्योग में केंद्रित बना सकते हैं यह सरकार के 'निकल डेवलपमेंट मिशन' को पूरा करने में भी सहायक है। इस बीच एनडीआरआई, फरनाल के डायरेक्टर राहुल सांखर डॉ. आरआरवी सिंह, डेयरी उद्योग, सहकारी दुग्ध संघ के सदस्य प्रगतिशील किसान भी मौजूद रहे।

**आमंत्रण****डॉ. कुरियन अवार्ड, पैट्रनशिप और फ़ैलोशिप के लिए नामांकन**

इंडियन डेरी एसोसिएशन निम्नलिखित पुरस्कारों के लिए नामांकन आमंत्रित करती है :

डॉ. कुरियन अवार्ड, पैट्रनशिप और फ़ैलोशिप

**योग्यता विवरण****डॉ. कुरियन अवार्ड**

डॉ. वर्गीज़ कुरियन के नाम पर स्थापित यह पुरस्कार उन व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मानित करने के लिए प्रारंभ किया गया है, जिन्होंने श्वेत क्रांति को सतत् बनाने में योगदान किया है। पुरस्कार स्वरूप दो लाख रुपये की राशि भेंट की जाती है, जो भारतीय डेरी उद्योग की वृद्धि और विकास में उनकी सार्थक सेवाओं को मान्यता प्रदान करती है।

**पैट्रनशिप**

आईडीए के सदस्य जिन्होंने डेरी विज्ञान और/या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में असाधारण शैक्षणिक व्यावसायिक उपलब्धियां हासिल की हैं या एसोसिएशन और/या डेरी या डेरी उद्योग को प्रगतिशील बनाने में अनेक वर्षों तक विशेष योगदान किया है।

**फ़ैलोशिप**

आईडीए के आजीवन सदस्य और पिछले कम से कम पांच वर्षों से लगातार सदस्य जिन्होंने एसोसिएशन की गतिविधियों में सक्रियता से भागीदारी की है और अनुसंधान, शिक्षण, प्रसार, प्रशासन तथा विकास कार्यों के माध्यम से डेरी या डेरी उद्योग को बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं।

उपरोक्त पुरस्कारों के लिए व्यक्ति या मान्यता प्राप्त संस्थान या संगठन निर्धारित फॉर्मेट में नामांकन भेज सकते हैं। यह उल्लेख करना आवश्यक है कि नामांकित व्यक्ति या संस्था किस प्रकार से पुरस्कार के लिए योग्य है। नामांकन ई-मेल या डाक से शीघ्र भेजे जाएं। नामांकन भेजने की अंतिम तिथि : 30 नवंबर, 2017

श्री अरुण नरके

अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन  
आईडीए हाउस, सेक्टर - IV, आर. के. पुरम  
नई दिल्ली- 110022

फोन : 26170781, 26165237, 26165355

ई-मेल : [idahq@rediffmail.com](mailto:idahq@rediffmail.com)

**नामांकन फॉर्मेट**

**नामित व्यक्ति या संस्था का विवरण निम्नलिखित फॉर्मेट में भेजे :**

- नामिती का नाम, पता, फोन नंबर, सदस्यता संख्या (नामित व्यक्ति का नवीनतम फोटो भी संलग्न करें)
- नामिती के जीवनवृत्त की जानकारी
  - जन्म का स्थान और तारीख
  - शैक्षणिक योग्यता
  - पद (सार्वजनिक व निजी संगठन), और प्राप्त सम्मान व पुरस्कार
- भारत के डेरी उद्योग के विकास, वृद्धि, अनुसंधान एवं शिक्षण में नामिती के योगदानों का विवरण
- नामांकन की तारीख
- तीन व्यावसायिक संदर्भों का नाम व पता, जो नामिती के कार्यों से भली-भांति परिचित हों
- संबंधित सहायक दस्तावेज और महत्वपूर्ण प्रकाशन
- नामांकन से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी, जो आप देना चाहें





## समृद्धि के लिए डेरी अपनाएं

आर. एस. खन्ना

चेयरमैन, क्वालिटी लिमिटेड, नई दिल्ली

वर्ष 2016-17 में 160 बिलियन लीटर दूध का उत्पादन कर हमारा देश विश्व में अग्रणी दूध उत्पादक देश बन गया है। विश्व के कुल दूध उत्पादन का लगभग एक चौथाई भाग भारत के दूध उत्पादकों की देन है। इस तरह देश में डेरी सेक्टर न केवल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों परिवारों की रोजी-रोटी का साधन बना हुआ है, उनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान में मददगार साबित हो रहा है। रोचक बात यह है कि भारत न केवल एक बड़ा दूध उत्पादक देश है, बल्कि दूध उपभोक्ता देश भी है। दूध और दूध उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण आज डेरी व्यवसाय किसानों की समृद्धि का एक अहम् साधन बन गया है।

**भा**रत सरकार द्वारा वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी किए जाने का संकल्प लिया गया है। 'संकल्प से सिद्धि' तक की यह यात्रा सहज नहीं है, परंतु नामुमकिन भी नहीं है। डेरी व्यवसाय किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। फसलों को लगाकर जहां कई माह या उससे भी अधिक समय तक प्रतीक्षा की जाती है,

तब उत्पादन बाजार पहुंच आय कराता है, वहीं पशु जल्दी आय कराता है, और वो भी दिन में दो बार। दूसरा रोचक पहलू यह है कि हर पशुपालक अपने पशुओं से प्राप्त दूध का कुछ अंश अपने लिए और अपने परिवार के लिए रखता है। बाकी दूध उसके दरवाजे से ही खरीद लिया जाता है। खास बात यह है कि देश भर में सरकारी और निजी क्षेत्र

की स्थापित डेरी इकाइयां सीधे दूध उत्पादकों से ही दूध खरीदती हैं और उन्हें उचित भुगतान करती हैं।

जहां तक दूध की कीमत का सवाल है, गुजरात मिल्क फेडरेशन द्वारा दूध की खरीद का जो मूल्य तय होता है, उसे मानते हुए अन्य दूध कंपनियां दूध उत्पादक को भुगतान करती हैं। यह भुगतान प्रणाली असंगठित डेरी क्षेत्र में लागू नहीं हो पाती और देश में संगठित डेरी क्षेत्र केवल 20 प्रतिशत है।

## दुगुनी कमाई के लिए कदम बढ़ाएं

दूध का सही मूल्य संगठित क्षेत्र के पशुपालक ही ले पाते हैं। यही कारण है कि जो किसान कम से कम दो दुधारू गाय या भैंस रखते हैं, वे एक तो अपनी आय में अतिरिक्त इजाफा करते हैं और परिवार को पोषण सुरक्षा भी देते हैं। इस तरह उनकी कर्जदारी नहीं होती है।

पशुओं की खरीद के लिए बैंक द्वारा लोन देने की व्यवस्था की गयी है। पशुओं की खरीद के लिए बैंकों द्वारा दिया जाने वाला ऋण किसी डेरी कंपनी को साथ लेकर दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर बैंक ऑफ इंडिया द्वारा बड़ी संख्या में पशुपालकों को ऋण दिया गया। इसके लिए देश की अग्रणी डेरी कंपनी, क्वालिटी लिमिटेड द्वारा मूर्तरूप दिया गया। बैंक ऑफ बड़ौदा और क्वालिटी लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से जारी इस लोन योजना की खास बात यह है कि यह पशुओं की खरीद के लिए तो लोन दे ही रही है, साथ ही मोटरसाइकिल और मोबाइल फोन के लिए भी ऋण दे रही है। योजना यों है कि चयनित पशुपालक को चार दुधारू पशु खरीदने के लिए तीन लाख रुपये का लोन दिया जा रहा है। इसके अलावा, 90 हजार की राशि मोटर साइकिल

के लिए और दस हजार मोबाइल फोन के लिए दिए जा रहे हैं। इस तरह से जो किसान अपनी आय दुगुनी करने में रुचि दिखाते हैं, वे चार लाख का लोन लेकर चार दुधारू पशु खरीद सकते हैं, दूध लाने ले जाने के लिए मोटर साइकिल, तो दूध की बिक्री की जानकारी के लिए मोबाइल है।

## जरूरी हैं बेहतर नस्लें

दूध उत्पादक भाई चाहे वह छोटे पशु यानी भेड़-बकरियां रखते हों या फिर बड़े दुधारू पशु गाय आदि रखते हों, बेहतर उत्पादन के लिए आवश्यक है कि पशुओं की नस्लें भी बेहतर हों। अगर यह पशु किसी हाट या संस्थान से खरीदे जा रहे हैं तो उनकी विश्वसनीयता जांच लें। सबसे पहली बात तो यह है कि क्षेत्र विशेष के आधार पर उन्नत नस्ल का ही पशु लिया जाए, दूसरी यह कि पशु का स्वास्थ्य बेहतर हो, तीसरी यह कि उसका

आनुवंशिकी रिकार्ड उच्च कोटि का हो।

अब बात आती है पशु को गर्भित करवाने की। तो सबसे पहले यह देखा जाए कि पशु का कृत्रिम गर्भाधान कराया जा रहा है या प्राकृतिक, दोनों ही दशा में उत्कृष्टता आवश्यक है। अगर मादा पशु का प्राकृतिक गर्भाधान हो रहा है तो मिलान के लिए चयनित सांड का बलिष्ठ और स्वस्थ होना तो आवश्यक है ही, साथ ही उसका आनुवंशिकी रिकार्ड भी बेहतर होना चाहिए। और अगर पशु के लिए कृत्रिम गर्भाधान कराया जा रहा है तो पहली बात तो यह कि जहां यह क्रिया हो रही है वह विश्वसनीय संस्था हो, दूसरी यह कि जिस पशु का वीर्य संग्रहित किया गया है वह उन्नत नस्ल का हो, साथ ही उसका आनुवंशिकी रिकार्ड भी श्रेष्ठ हो।

## सरकार से अनुरोध है कि.....

- डेरी फार्मिंग को आयकर से छूट मिले
- पशु खरीद आदि के लिए सस्ते ब्याज दर पर ऋण सुविधाएं दी जाएं
- डेरी से जुड़े निजी क्षेत्र को बढ़ावा दिया जाए
- दुधारू पशुओं के आनुवंशिक सुधार के लिए ठोस कदम उठाए जाएं
- गौवंश-भैंस पशुओं के लिए प्रजनन नीति तैयार की जाए
- दूध का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) निर्धारित किया जाए

## आवास है खास

पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए उनका सही वैज्ञानिक आवास और पशु प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अकसर पशुपालक अपने पशुओं को उचित आवास नहीं दे पाते हैं, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर सीधे पड़ता है, जो उत्पादन पर चोट करता है। यही नहीं, यह पशु की आनुवंशिक श्रेष्ठता पर भी चोट करता है। यहां पर यह बात भी समझ ली जाए कि पशु को प्रारंभ से ही रोगों से बचाया जाए, ताकि वह स्वस्थ रहे। रोगों का आवास से संबंध होता है, विशेषकर संक्रमण द्वारा फैलने वाले रोग, जैसे थनैला, परजीवी संक्रमण, क्षय रोग, चेचक, खुरपका-मुंहपका, एंथेक्स, ब्लैक क्वार्टर आदि। तो इसके लिए स्वयं पशुपालक को आगे आना होगा। पहली समझदारी तो यही है कि रोगी पशु को अन्य पशुओं के साथ न रखें, दूसरा यह है कि नवजात का तत्काल टीकाकरण कराएं और उम्र के हर पड़ाव पर उसे जारी रखें। जान लें कि समय-समय पर सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा पशु स्वास्थ्य कैंप लगाए जाते हैं, अपने पशुओं को वहां अवश्य ले जाएं और जांच कराएं। इसके अलावा, भी पशुओं के स्वास्थ्य की नियमित जांच करानी चाहिए और पशु चिकित्सक द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन भी कीजिए।

## अच्छा खिलाएं, उत्पादन बढ़ाएं

दुधारू पशु को जितना बेहतर गुणवत्ता वाला आहार दिया जाएगा वह उतना ही अधिक उत्पादन दिखाएगा। ज्ञात हो आहार से दूध का 70 प्रतिशत लाभ प्राप्त होता है। जान लें कि कोई भी प्रजनन या उत्पादन सफलता तब तक नहीं मिल सकती, जब तक कि पशुओं को उचित आहार, पोषक तत्व और खनिज की पूर्ति न की जाए। देश में पशु चारे की कमी है और स्थायी



जरूरी है शिशु अवस्था से ही बेहतर देखभाल

चारागाहों का भी अपेक्षाकृत अभाव है। आंकड़े बताते हैं कि इस समय देश के पूरे भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत स्थायी चारा और चारागाह का क्षेत्र लगभग 3.6 प्रतिशत है। इसके अलावा कुल कृषि योग्य भूमि की मात्रा 4.66 प्रतिशत पशुओं के लिए सीमित है, जो घट रहा है, बढ़ नहीं रहा। यहां एक बात और लाभ की तथा विचार की भी है, वह यह कि फसल अपशिष्ट यानी पराली को अधिकांश किसान

जलाकर स्वाहा कर डालते हैं, जबकि यह एक सस्ता, टिकाऊ और पौष्टिक पशु आहार है।

यहीं पर विचारणीय प्रश्न यह भी है, कि देश में हर वर्ष 120 मिलियन टन हरे चारे की आवश्यकता है मगर हमारे पास मात्रा आठ मिलियन टन चारा तैयार करने की सुविधा है। जाहिर है सोच यह आती है कि पशु आहार की क्षमता में बढ़ोतरी की जाए साथ ही

चारा गुणवत्ता नियंत्रण की प्रयोगशालाओं में भी इजाफा हो। यही नहीं पशु आहार संबंधी नई प्रौद्योगिकियां विकसित की जाएं, अब जैसे बाईपास प्रोटीन और बाईपास वसा प्रौद्योगिकियां, कुल मिश्रित राशन, पूर्ण आहार प्रौद्योगिकियां आदि। इसके अलावा चारा फसलों और उनके लिए प्रयुक्त बीज को भी बेहतर गुणवत्ता वाला होना आवश्यक है।

## सलाह



## गाभिन गाय की बेहतर देखभाल से अधिक दूध उत्पादन

निशान्त कुमार, शैलेश कुमार गुप्ता, पंकज कुमार जोशी एवं एस. एस. लठवाल  
पशुधन अनुसन्धान केंद्र  
राष्ट्रीय डेरी अनुसन्धान संस्थान, करनाल

प्रत्येक पशुपालक को गाभिन पशुओं की विशेष देखभाल करनी चाहिए, क्योंकि ब्याने के बाद दूध उत्पादन की मात्रा और गाय का स्वास्थ्य इसी पर निर्भर करता है। गर्भ में पलने वाले बच्चे के विकास के लिए भी गाय के खान-पान एवं रहन-सहन का विशेष प्रबंध करना आवश्यक है। गाय का गर्भकाल 270 से 285 दिन के बीच होता है। इस दौरान गायों को आवश्यक प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज व वसा युक्त आहार की जरूरत होती है। संतुलित और पर्याप्त आहार देने से सेहतमंद बच्चे का जन्म होता है।

**गा**य की गर्भावस्था उसके दूध उत्पादन के नजरिये से बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए इसके दौरान पशुपालकों को कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए:

- कलोर या प्रथम बार गर्भ धारण करने वाली बछिया की उम्र ढाई से तीन वर्ष तक होनी चाहिए।
- गाभिन पशुओं का आहार संतुलित, आसानी से पचने वाला एवं पौष्टिक होना चाहिए। उनके आहार में हरे चारे के साथ दाने में प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज लवण

एवं विटामिन का समावेश समुचित मात्रा में मौजूद रहना आवश्यक है।

- गाभिन गाय को औसतन 30-35 किलोग्राम हरा चारा, 3-4 किलोग्राम सूखा चारा, 2-3 किलोग्राम दाना, 60-70 ग्राम खनिज तथा 40-50 ग्राम नमक प्रतिदिन देना चाहिए। यदि पशु को मुख्य रूप से सूखे चारे पर रखना है तो उसे 5-8 किलोग्राम भूसा और 5-10 किलोग्राम हरा चारा दें और उसके आहार में दाने की मात्रा 3-4 किलोग्राम शामिल करनी चाहिए।

## ब्याने के बाद भी पशु की विशेष देखभाल करें

- ब्याने के तुरंत बाद पशु को आसानी से पचने योग्य आहार जैसे चोकर, दलिया, हरा चारा, गुड़ का काढ़ा आदि खिलाया जा सकता है।
- ब्याने के बाद उन्हें ताजा, गुनगुना साफ पानी पिलाना चाहिए। पशु की ताजगी और स्फूर्ति के लिए हल्दी 30 ग्राम, सौंठ 15 ग्राम, अजवाइन 15 ग्राम और गुड़ 250 ग्राम को एक लीटर पानी में उबाल कर दो-तीन दिन तक सुबह और शाम पिलाना चाहिए।
- पशु को 3-4 दिनों तक भारी आहार नहीं देना चाहिए। इस दौरान पशु को शीघ्र पचने वाला आहार जैसे गेहूं, जौ या बाजरा की दलिया गुड़ में मिलाकर सुबह-शाम 5-7 दिनों तक देना चाहिए।
- गाय को कुछ दिनों तक अन्य जानवरों के साथ नहीं छोड़ना चाहिए। कुछ दिन बीत जाने के बाद ही सामूहिक चरने हेतु ले जाना चाहिए।
- दूसरे सप्ताह से दूध के उत्पादन के अनुसार दाने की पूरी खुराक में अनाज, खली, घास या हरा चारा आदि देना चाहिए।
- लगभग तीन से चार सप्ताह बाद गाय फिर से सामान्य अवस्था में आ जाती है।

- दुधारू गाय के ब्याने से दो महीने पहले दूध निकालना बंद कर देना चाहिए, ताकि पशु सूखी अवस्था में आ जाए। सुखाने के बाद जानवर को रोजाना लगभग 1.5 किलोग्राम दाना मिश्रण देना चाहिए। इस विधि को स्टीमिंग-अप कहा जाता है। स्टीमिंग-अप से ब्याने के बाद पशु से अधिकतम दूध उत्पादन होता है तथा यह शारीरिक बढ़वार में भी सहायक है।
- जिन पशुओं में अधिक दूध उत्पादन की क्षमता हो, उन्हें नकारात्मक ऊर्जा संतुलन से बचाने के लिए तथा उनसे अधिकतम दूध प्राप्त करने के लिए ब्याने के दो सप्ताह पहले से प्रतिदिन 500 ग्राम सांद्र दाना देना चाहिए। इसे प्रतिदिन 300-400 ग्राम तब तक बढ़ाना चाहिए जब तक जानवर 1 किलोग्राम सांद्र दाना प्रति 100 किलोग्राम शारीरिक वजन तक न खाने लग जाए। इसे चैलेंज फीडिंग कहा जाता है। इससे पशुओं में ऊर्जा का संतुलन समान्य बना रहता है और अधिकतम दूध उत्पादन प्राप्त होता है।
- ब्याने से पहले गाभिन गाय के राशन में कैल्शियम की मात्रा अधिक नहीं होनी चाहिए अन्यथा ब्याने के बाद पशु की आँतों से कैल्शियम का अवशोषण कम हो सकता है तथा पशु को मिल्क फीवर अथवा दूध ज्वर होने की आशंका हो सकती है।
- गाभिन गाय के राशन में पर्याप्त मात्रा में आयोडीन तथा ऊर्जा होनी चाहिए। ऊर्जा की कमी होने से पशु को कीटोसिस नामक बीमारी हो सकती है।
- पशु के ब्याने के 15 दिन पहले उसे अन्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए, जहां जानवर की विशेष देखभाल हो सके।
- एक आदर्श ब्याने वाले कक्ष का आकार 3 मीटर गुणा 4 मीटर होना चाहिए। साथ ही बिछावन की उपयुक्त व्यवस्था भी होनी चाहिए।
- इस काल में गाभिन गाय को अन्य जानवरों से चोट लगने की संभावना रहती है तथा अन्य जानवरों से किसी प्रकार के संक्रमण के कारण गर्भपात भी हो सकता है। इसलिए विशेष आवास और प्रबंधन जरूरी है।
- गाभिन पशु को हमेशा साफ-सुथरे वातावरण में रखना चाहिए। साधारण व्यायाम भी कराना चाहिए।
- पशु को डराना, धमकाना या परेशान नहीं करना चाहिए। पशु को दौड़ाना नहीं चाहिए। उन्हें गर्मी, सर्दी एवं बरसात से बचाना चाहिए।

- प्रसव का दिन निकट आने पर विशेषकर अंतिम दो – तीन दिनों में विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है, क्योंकि प्रसव दिन या रात किसी भी समय हो सकता है।

### ब्याने के दौरान गाय की देखभाल

- ब्याने के समय की पहचान गाय के शारीरिक बदलाव और सक्रियता से पता करनी चाहिए। थन का आकार अचानक बढ़ना, कम भोजन लेना, बेचैनी, एकांत ढूँढना, पूंछ के दोनों ओर की मांस पेशियों का ढीला पड़ना और योनि से स्त्राव आदि प्रमुख लक्षण हैं।
- ब्याने की अवस्था में पशु पालक को दूर से निगरानी करनी चाहिए क्योंकि नजदीक होने से पशु का ध्यान बंट सकता है तथा ब्याने में देरी अथवा बाधा उत्पन्न हो सकती है।
- ब्याने से पहले बिछावन बदल देनी चाहिए और प्रयास करके जर्मरहित वातावरण प्रदान करना चाहिए।
- यदि ब्याने में किसी प्रकार की बाधा दिखाई पड़े तो

तुरंत सहायता करनी चाहिए।

- यदि प्रसव पीड़ा की शुरुआत के दो घंटे बाद भी बच्चा बाहर नहीं निकला है तो योनि मार्ग में बच्चा फँसने की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में तुरंत नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- आमतौर पर डेरी पशुओं में ब्याने के 4-6 घंटे के अन्दर जेर अपने आप बाहर निकल आती है, परन्तु अगर ब्याने के 12 घंटे के बाद भी जेर नहीं गिरती तो उस स्थिति को जेर का रुकना अथवा 'रिटेंड प्लेसेंटा' कहा जाता है। ऐसी स्थिति में तुरंत नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।
- जैसे ही जेर निकल कर गिरे, उसे तुरंत हटाकर कहीं दूर गड़ढे में गाड़ देना चाहिए, अन्यथा कुछ पशु जेर को खा लेते हैं, जिसका दुष्प्रभाव पशु के स्वास्थ्य एवं दूध उत्पादन पर पड़ता है। ब्याने के स्थान को फिनाइल घोल से अच्छी तरह साफ कर देना चाहिए।

## ‘दुग्ध सरिता’ का अभियान, संपन्न बनें डेरी किसान लेखकों से निवेदन

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा लोकप्रिय द्विमासिक पत्रिका ‘दुग्ध सरिता’ के प्रकाशन का शुभारंभ एक अभियान के रूप में किया गया है। इसका उद्देश्य नयी जानकारीयों और उपयोगी सूचनाओं को डेरी किसानों, डेरी उद्यमियों तथा डेरी व्यवसायियों तक पहुंचाकर उनकी सकल आमदनी को बढ़ाना तथा डेरी सैक्टर का विकास करना है। यदि आप डेरी वैज्ञानिक, डेरी किसान, डेरी उद्यमी, डेरी सहकारिता या डेरी सैक्टर से जुड़े हैं तो हमारा अनुरोध है कि ‘दुग्ध सरिता’ में अपना लेखकीय योगदान देकर हमारे अभियान में भागीदार बनें और उसे सफल बनाएं।

आप हमें जानकारीपूर्ण सचित्र लेख, अपने सकारात्मक अनुभव, सफलता की कहानियां, केस स्टडीज़ तथा अन्य उपयोगी जानकारी प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। बस गुजारिश सिर्फ इतनी है कि यह सामग्री सरल और सहज भाषा में तथा हमारे लक्ष्य वर्ग के लिए उपयोगी हो। हम अधिकतम 2,000 शब्दों तक की रचनाओं का स्वागत करते हैं। हमारे लिए आपका योगदान अमूल्य है, परंतु प्रकाशित रचनाओं पर एक सांकेतिक धनराशि मानदेय के रूप में प्रदान की जाती है। आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

- कृपया अपनी रचनाएं कृतिदेव 016 फ़ोंट में ई-मेल करें। हमारा ई-मेल पता है : [dsarita.ida@gmail.com](mailto:dsarita.ida@gmail.com)
- रचनाओं के साथ बेहतर गुणवत्ता के और सार्थक चित्रों को कैप्शन के साथ .jpg फॉर्मेट में भेजें।
- अपना एक पासपोर्ट साइज फोटो भी संलग्न करें।



तकनीक

## दूध उत्पादन बढ़ाएं, वर्ष भर हरा चारा खिलाएं

राकेश कुमार, उत्तम कुमार एवं हरदेव राम

सस्य विज्ञान अनुभाग

भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

**फ**सल उत्पादन और पशुपालन व्यवसाय भारतीय कृषि का आधार हैं। पशुपालन व्यवसाय में 60-65 प्रतिशत खर्चा पशु पोषण पर आता है। पशुपालक अपने फार्म पर चारे वाली फसलों की खेती करके इस खर्चे को कम कर सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से हरे चारे पोषक तत्वों के सबसे सस्ते स्रोत हैं। हरे चारे से पशु स्वस्थ एवं प्रजनन योग्य बना रहता है तथा पशुओं की उत्पादक क्षमता लम्बे समय तक बनी रहती है। चारा फसलें मुख्यतः दलहनी एवं घास कुल से संबंधित होती हैं। दलहनी फसलों में प्रोटीन, कैल्शियम, मैग्नीशियम और फॉस्फोरस की मात्रा अधिक होती है, जबकि घास कुल की फसलों में रेशा और कार्बोहाइड्रेट (शर्करा) भरपूर मात्रा में होता है। पशुओं को

संतुलित आहार के लिये दलहनी एवं घास कुल की फसलों के चारे का मिश्रण खिलाना चाहिए।

### वर्ष भर हरा चारा कैसे मिले

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में हुए परीक्षणों से सिद्ध हो चुका है कि उपयुक्त फसल-चक्र अपनाकर हरा चारा वर्ष भर प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए नीचे बतायी गयी सलाह के अनुसार जरूरी कदम उठाये जा सकते हैं :

- अधिक चारा उत्पादन के लिए चारा फसलों की उन्नत प्रजाति को उगाना चाहिए।

## सारणी-1 : चारा फसलों की कृषि कार्यशाला

फसल	स्वीकृत किस्म	बोने का समय	बीज की दर कि.ग्रा./है	खाद कि.ग्रा. है।	सिंचाई	फसल काटने का समय	उत्पादन टन / है०	टिप्पणी
ज्वार	पूसा चरी-1,6 और 9 जे.एस. 20 हरियाणा चरी विदिशा 60-1 एच.सी.136 उज्जैन 6,8 सी.ओ.11 एस. 44, स्वर्ण मीठी एमपी चरी	मार्च से जुलाई (उ), फरवरी से 1 नवम्बर (द)	50	नाइट्रोजन 100 कि.ग्रा. दो भागों में	गर्मी में 3-4 वर्षा के मौसम में आवश्यकता अनुसार	80-90 दिन देर से तैयार होने वाली किस्म एवं 60-70 दिन जल्दी तैयार होने वाली किस्म	30-50	गर्मी में एच.सी.एन. होती है और फूल आने से पहले नहीं खिलाना चाहिए
मक्का	अफ्रीकन टाल, गंगा-5,2, विजय कम्पोजिट, जे.1006 और जवाहर	मार्च से अगस्त (उ) फरवरी से नवम्बर (द)	60-75 50-60	नाइट्रोजन 100 कि.ग्रा. दो भागों में	गर्मी में 4-6 वर्षा के मौसम में आवश्यकता अनुसार	60-70 दिन	30-35	----
बाजरा	बी.जे-104, बी.के 560,230 संकर या बी. एल.-74 कई कटाई वाली	मार्च से 10 जुलाई (उ) , फरवरी से नवम्बर (द)	10	नाइट्रोजन 75 किलो दो भागों में	गर्मी में 3-4 वर्षा के मौसम में आवश्यकता अनुसार	50-60 दिन फूल जाने से पूर्व	35-45	----
लोबिया	एफ.ओ.एस-1, एच 71, के 396 रशियन जाइंट और यू.पी. 286,, 287	अप्रैल से जुलाई (उ), फरवरी से नवम्बर (द)	40-50 शुद्ध 15-20 मिश्रण।	नाइट्रोजन 25 कि.ग्रा. फॉस्फोरस 60 कि.ग्रा.	2-3	60-70 दिन	35	जल निकास का अच्छा प्रबन्ध होना चाहिए
ग्वार	एफ.एस 277 ग्वार-80	जून से जुलाई	30-40 ब्रांच, 50-55 बिना ब्रांच	नाइट्रोजन 20 कि.ग्रा. फॉस्फोरस 40 कि.	1-2	65-85 दिन	30-35	जल निकास का अच्छा प्रबन्ध होना चाहिए



जई	हरियाणा जवी, कैंट, यू.पी.ओ., ओ.एल.9, जे.ए. ओ.-822 ओ.एस. 6, ओ. एस. 8	मध्य अक्टूबर से दिसम्बर के अन्त तक	75-80 मध्यम आकार के बीज 100-120 मोटे बीज	नाइट्रोजन 100 कि.ग्रा. दो भागों में	3-4	110-120 दिन एक कटाई, 55-60 दिन दूसरी कटाई, उसके 50-55 दिन बाद	45-50	---
बरसीम	मस्कावी वरदान वी.एल 10,22,42	सितम्बर के मध्य और नवम्बर के प्रारम्भ में	25-30	फॉस्फोरस. 80 कि.ग्रा.	जाड़ों में 15-20 दिन और गर्मी में 10-15 दिन के अन्तर पर	पहली कटाई 40-45 दिन, दूसरी कटाई और तीसरी कटाई 30-35 दिन पर, इसके बाद 20-25 दिन पर	75-80 50-70	बरसीम कल्चर का उपयोग करना आवश्यक
लूसर्न	टी-9 (बहुवर्षीय) आनंद-2 (वार्षिक) चेतक	अक्टूबर से नवम्बर	15	नाइट्रोजन 25 कि.ग्रा. फॉस्फोरस. 80 कि.ग्रा.	जाड़े में 20 और गर्मी में 19 दिन के अन्तर पर	पहली कटाई 75-90 दिन बाद, इसके पश्चात कटाई 20-30 दिन के बाद	50-60	मई से जून में अत्यधिक अच्छी मिलती है
सरसों	एल.जी.एल. जापानी रेपसीड चाइनीज कैबेज	सितम्बर के प्रारम्भ से नवम्बर के अन्त तक	8-15	नाइट्रोजन 60 कि.ग्रा. दो भागों में	2-3	60-70 दिन बाद	35-50	चाइनीज कैबेज से दो कटाई ली जा सकती है। यदि पहली कटाई 45 दिन बाद की जाये।
शलजम	लाल और सफेद	सितम्बर से नवम्बर	5-6	200 कि.ग्रा. नाइट्रोजन दो भागों में, पोटाश मिट्टी परीक्षण के अनुसार	3-4	60-70 दिन बाद	35-50	फसल की समय पर कटाई पर लेनी चाहिए
नेपियर बाजरा संकर	एन.वी. 21 एन.वी. -4 एन.वी. -3	मार्च से जुलाई (उ) फरवरी से नवम्बर (द)	36000 (जड़ें)	नाइट्रोजन 200 कि.ग्रा.	गर्मी में 10 दिन, जाड़े में 20 दिन के अन्तर पर	पहली कटाई 60 दिन में, इसके बाद 35-40 दिन के पश्चात	150 (उ) 200 (द)	सही अवस्था में खिलाना चाहिए

हरा चारा दुधारू पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य और अधिकतम दूध उत्पादन के लिए आवश्यक है। पशु इसे चाव से खाते हैं और आसानी से पचाते भी हैं। हरे चारे में वांछित विटामिन-ए और खनिज अधिक मात्रा में होते हैं जो पशु की प्रजनन शक्ति के लिए महत्वपूर्ण हैं। हरा चारा खिलाने से न सिर्फ दूध में बढ़ोतरी होती है बल्कि उनके खान-पान का खर्चा भी कम हो जाता है। यह प्रयास होना चाहिए कि पशुओं को वर्ष भर हरा चारा खिलाया जाए। आइए जानें इस प्रयास की कामयाबी के नुस्खे।

- चारे के उत्तम गुणवत्ता वाले बीजों का प्रयोग करना चाहिए।
- सिंचित क्षेत्रों में जब दो फसलों के बीच खेत खाली हो तो कम समय में तैयार होने वाली चारा फसलों को उगाना चाहिए।
- गांव की सामूहिक भूमि पर बहुवर्षीय घास एवं चारे वाले वृक्षों, जैसे सेस्बानिया, खेजरी, सुबबूल को लगाएं।
- फलीदार और बिना फलीदार वाले हरे चारे को मिलाकर खिलाने से चारा अधिक पौष्टिक हो जाता है।
- जब हरे चारे की आधी फसल में फूल आ जाएं, तब उसे काट कर खिलाना उपयुक्त होता है।
- घर के पिछवाड़े गंदे पानी के निकास के स्थान पर एक से ज्यादा कटान देने वाली बहुवर्षीय घास लगानी चाहिए।
- वर्ष भर हरा चारा खिलाने के लिए उपयुक्त फसलों को सघन फसल चक्रों में उगाना चाहिए। फसलों को उगाने के लिए उत्पादन प्रणाली सारणी-1 बतायी गई है।

### कहां उगाएं, कौन-सी चारा फसलें

भारत के विभिन्न भागों में चारे की निम्नलिखित फसलें उगाई जा सकती हैं।

**उत्तर भारत :** ज्वार, मक्का, जई, बरसीम, सैजी, लोबिया, राई घास, आदि।

**पश्चिम एवं मध्य भारत :** बाजरा, ज्वार, मक्का, ग्वार, लोबिया, जई, जौ, रिजका, बरसीम, गिनी घास, आदि।

**पूर्वी भारत :** मक्का, पैरा एवं संकर हाथी घास, जई, राईसबीन, बरसीम, आदि।

**दक्षिणी भारत :** मक्का, ज्वार, संकर हाथी घास, स्टाइलो, लोबिया, आदि।

**खरीफ ऋतु की चारा फसलें :** ज्वार, मक्का, बाजरा, लोबिया, मकचरी एवं ग्वार खरीफ मौसम की चारे की मुख्य फसलें हैं। इन फसलों को उगाकर मई से अक्टूबर तक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।

**रबी ऋतु की चारा फसलें—**बरसीम, लूसर्न (रिजका) और जई रबी मौसम की मुख्य चारा फसल हैं। इनसे दिसम्बर से लेकर मई तक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।

### सही फसल चक्र

उचित फसल चक्र अपनाने से वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता के साथ मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बनी रहती है। उचित प्रबन्धन द्वारा वर्ष भर में फसल चक्र अपनाकर 180–300 टन तक हरे चारे का उत्पादन किया जा सकता है।



हरे चारे के साथ प्यार-दुलार भी

## सारणी-2 : वर्ष भर हरे चारे के लिए उपयुक्त फसल-चक्र

फसल चक्र	हरा चारा उपज (टन/है./वर्ष)
नेपियर x संकर बाजरा+लोबिया - बरसीम	260
मक्का + लोबिया - एमपी चरी + लोबिया - बरसीम + जापानी सरसों	197
एमपी चरी + लोबिया- बरसीम + जापानी सरसों	184
लोबिया - एमपी चरी + लोबिया - बरसीम + जापानी सरसों	176
नेपियर x संकर बाजरा + लोबिया - बरसीम - लोबिया	255

निम्न फसल चक्रों को क्षेत्र के अनुसार अपनाने से वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता बनाई जा सकती है।

## उत्तरी क्षेत्र

1. मक्का + लोबिया-ज्वार + लोबिया (दो कटाई) - बरसीम + सरसों
2. सूडान घास + लोबिया - मक्का + लोबिया - शलजम - जई (दो कटाई)
3. जायद में लोबिया के साथ संकर नेपियर या स्टेरिया की अन्तः रोपाई और रबी में बरसीम (9-10 कटाई/ वर्ष)
4. मकचरी + लोबिया (दो कटाई) - गाजर - जई + सरसों/सैंजी (दो कटाई)

## पश्चिम एवं मध्य क्षेत्र

1. बाजरा + ग्वार (दो कटाई) - वार्षिक लूसर्न (छह कटाई)
2. एम पी चरी + लोबिया (दो कटाई) - मक्का + लोबिया - मकचरी + लोबिया (दो कटाई)
3. जायद में लोबिया के साथ संकर नेपियर या गूनिया या स्टेरिया घास की अन्तः रोपाई और रबी में बरसीम (8-9 कटाई/ वर्ष)
4. लूसर्न के साथ संकर नेपियर या गूनिया या स्टेरिया

घास की अन्तः रोपाई (8-9 कटाई/वर्ष)

## दक्षिणी क्षेत्र

1. ज्वार + लोबिया (तीन कटाई) - मक्का + लोबिया - मक्का + लोबिया
2. लूसर्न के साथ संकर नेपियर या गूनिया या स्टेरिया घास की अन्तः रोपाई (8-9 कटाई)
3. संकर नेपियर + सुबबूल/ ढैंचा (9-11कटाई/ वर्ष)
4. सूडान घास + लोबिया (तीन कटाई) - एमपी चरी + लोबिया (तीन कटाई)
5. पैरा घास + सैन्ट्रो (सैन्ट्रोसेमा प्यूबेसेंस) (9-11कटाई/ वर्ष)

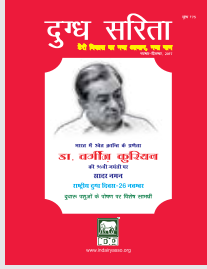


हरे चारे की व्यवस्था

## पूर्वी क्षेत्र

1. मक्का + लोबिया - मकचरी + राइसबीन (दो कटाई) - बरसीम + सरसों (तीन कटाई)।
2. एमपी चरी + लोबिया - दीनानाथ घास (दो कटाई) - बरसीम + सरसों (तीन कटाई)।
3. पैरा घास + सैन्ट्रो (8-9 कटाई/वर्ष)।
4. सुबबूल के साथ संकर नेपियर या स्टेरिया घास की अन्तः रोपाई या सामान्य ढैंचा (सेस्बेनिया सस्बेन) (9-10 कटाई/ वर्ष)।

## ‘दुग्ध सरिता’ के सदस्य बनें घर बैठे पत्रिका पाएं



इंडियन डेरी एसोसिएशन  
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता

(द्विमासिक पत्रिका)

अंकों की संख्या : 6

वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/-

कीमत रु. 75/- प्रति अंक

साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या  
रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/- प्रति अंक

**दुग्ध सरिता** : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। ‘दुग्ध सरिता’ डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

‘दुग्ध सरिता’ की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। ‘दुग्ध सरिता’ में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा ‘इंडियन डेरीमैन’ और ‘इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस’ नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

### सदस्यता फॉर्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूँ :

**दुग्ध सरिता** विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष/प्रतियों की संख्या   
(कृपया टिक करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम.....

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....

पता.....

शहर.....

राज्य..... पिन कोड..... ई-मेल.....

फोन..... मोबाइल.....

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (एट पार) नं.....

बैंक..... इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी..... तारीख..... राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई-मेल करें।

सेक्रेटरी (एस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर-1V आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : [dsarita.ida@gmail.com](mailto:dsarita.ida@gmail.com) वेबसाइट : [www.indairyasso.org](http://www.indairyasso.org)

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : SYNB0009009

बैंक : सिंडिकेट बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022



## गोकुल माइक्रो प्रशिक्षण केंद्र से पशुपालकों की उन्नति

अरुण दत्तात्रय नरके  
निदेशक

कोल्हापुर जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोल्हापुर

कोल्हापुर जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड, कोल्हापुर (गोकुल) पशुपालकों को दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेक सेवाएं उनकी गौशाला पर प्रदान करता है। इसके अंतर्गत विभिन्न विस्तार योजनाएं शामिल हैं, जैसे पशुचिकित्सा सेवाएं, चारा विकास योजना, स्वच्छ दूध उत्पादन, कृत्रिम गर्भाधान आदि। एक महत्वाकांक्षी योजना के अंतर्गत एक सफल पशुपालक माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर के माध्यम से दूसरे पशुपालकों को प्रशिक्षित करता है। अपने ज्ञान और अनुभव की साझेदारी करता है।

**को**ल्हापुर जिले में बड़ी तादाद में किसान डेरी व्यवसाय में लगे हैं, जिनमें से अधिकांश किसान भूमिहीन और सीमांत हैं। यह अपना डेरी व्यवसाय पारंपरिक तरीके से चलाते हैं, जिससे आमदनी में कमी या व्यवसाय में घाटा होता है। गोकुल द्वारा किसानों को दूध व्यवसाय की नई तकनीकों और जानकारियों को जल्दी से जल्दी किसानों के पास पहुंचाने के लिए गोकुल ने माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर स्थापित करने की पहल की है।

### माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर का डिजाइन

- इस प्रशिक्षण केंद्र को स्थापित करने का उद्देश्य यह है कि सफल किसान अपने ही तबेले या गोठे में दूसरे किसानों को अपना व्यावहारिक ज्ञान व्यक्त करे क्योंकि देखने के बाद ज्यादा विश्वास होता है।
- प्रशिक्षण के लिए किसान पति और पत्नी, दोनों को एक साथ भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

- प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुल्क रु. 210 प्रति प्रशिक्षणार्थी है, जिसमें से रु. 100 प्रति प्रशिक्षणार्थी यूनियन की तरफ से माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर चलाने वाले किसान को दिया जाता है। किसानों को भोजन और नाश्ते के लिए रु. 80 देना पड़ता है और प्रशिक्षण के लिए आने का खर्चा रु. 50 प्रति प्रशिक्षणार्थी दूध संस्था को देना पड़ता है।
- प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम यूनियन द्वारा दिया गया है। यह पाठ्यक्रम किसान और उसके परिवार वाले पढ़ाते हैं।
- प्रशिक्षण में पढ़ाये जाने वाले विषय:
  - प्रबंधन: पोषण, प्रजनन और आवास नियोजन
  - हरे चारे का महत्व
  - बछड़े पालन का वैज्ञानिक तरीका
  - डीवर्मिंग और टीकाकरण का महत्व
  - स्वच्छ दूध उत्पादन और मशीन से दूध निकलवाना
  - पशु आहार और मिनरल मिक्श्चर का महत्व
  - मुक्त आवास का महत्व
  - सायलेज बनाना
  - जानवरों में बांझपन का कारण



जानकारी प्राप्त करते डेरी किसान

- प्रशिक्षण पूरा होने के बाद यूनियन के सुपरवाइजर

## गोकुल द्वारा स्थापित माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर्स

- माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर टिटवे, तहसील – राधानगरी, किसान – श्री सागर किल्लेदार – 9423841748
- माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर नानीबाई चिखली, तहसील – कागल, किसान, किसान – श्री अरविंद पाटील – 9860764212
- माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर कसबा नुल, तहसील – गडहिंलगज, किसान – श्री सुरेश शेगुणशे – 9275449875
- माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर चिंचवाड, तहसील – शिरोल, किसान – श्री सुनिल बापू पाटोले – 9422754431

और माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर वाला किसान किसानों के गांव में जाकर प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान के प्रयोग को देखते हैं। माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर का विज्ञापन परिपत्र के माध्यम से और पर्यवेक्षक प्रत्यक्ष दूध संस्था में जाकर करता है।

- प्रशिक्षण केंद्र की बिल्डिंग किसान की होगी, यूनियन द्वारा फर्नीचर, टेबल-कुर्सी, अलमारी, ब्लैकबोर्ड, चाक-डस्टर, पब्लिक एड्रेस सिस्टम, प्रशिक्षण सामग्री इंफारमेटिव डिजिटल सामग्री आदि प्रदान की जाती है।

### माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर चयन के लिए आवश्यक सुविधायें :

- 20 से अधिक संकरित गाय या भैंस हों,
- सफल डेरी व्यावसायिक किसान,
- मुक्त आवास प्रणाली,
- मिल्किंग मशीन,
- मुरघास पिट,

## सारणी- 1 माइक्रो ट्रेनिंग सेंटर द्वारा चलाये गये प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण

वर्ष	गांवों की संख्या	दूध संस्था	महिला	पुरुष	कुल
2009-10	232	232	4106	3377	7483
2010-11	279	271	5851	4228	10079
2011-12	335	335	6803	5828	12631
2012-13	223	224	3686	3677	7363
2013-14	536	566	11093	12362	23455
2014-15	385	385	6657	8908	15565
2015-16	433	431	2923	3590	6513
2016-17	141	168	2923	3590	6513
<b>कुल</b>	<b>2564</b>	<b>2628</b>	<b>44042</b>	<b>45560</b>	<b>89602</b>

- चारा कुटटी मशीन,
- हरे चारे का प्लांट,
- अच्छा आहार और पानी का प्रबंधन, और
- यूनिजन के उन्नत मादा बछड़ा पालन योजना में सहभागी।

### प्रत्यक्ष लाभ

- पारंपरिक तरीके से दूध व्यवसाय करने वाले किसानों को किफायती दूध व्यवसाय करने के तरीके के बारे में जानने का अवसर मिला।
- प्रशिक्षण में भाग लेने वाले अधिकांश किसान प्रशिक्षण में पढ़ाये तरीके अपनाने लगे हैं।
- प्रबंधन विधियों में सुधार आया है।
- दूध उत्पादन में वृद्धि हो गई है।
- किसानों में डेरी व्यवसाय के बारे में जागरूकता आयी है।
- दो ब्यांत के बीच का अंतर कम हुआ है।
- हरा चारा उगाने में और साइलेज बनाने में बढ़ोतरी हुई है।
- किसान जानवरों के लिए मुक्त आवास अपना रहे हैं।

- पशुओं को संतुलित आहार खिलाने से मिथेन गैस का उत्सर्जन भी कम हो रहा है, जिससे जलवायु परिवर्तन को जन्म देने वाले ग्रीन हाउस प्रभाव को कम करने में मदद मिल रही है।

### लोकप्रिय कार्यक्रम



पशु स्वास्थ्य में सुधार

अभी तक 89,000 से अधिक पशु पालकों ने माइक्रो प्रशिक्षण सेंटर में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया है। किसानों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भाग लेना ही इसकी सफलता दर्शाता है। डेरी फार्मिंग के बारे में किसानों का रवैया सकारात्मक हुआ है और अब पूरी तरह बदल रहा है। एनडीडीबी ने माइक्रो ट्रेनिंग केंद्र का महत्व जाना है और इसे एनडीपी कार्यक्रम में शामिल करके इसका प्रसार देश के अन्य भागों में किया है। ■

## सर्दियों में पशुओं की देखभाल

डा. राजेन्द्र सिंह

वरिष्ठ विस्तार विशेषज्ञ,  
पशु विज्ञान, रोहतक

लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा व  
पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार



पशु धन से अधिकतम आय व लाभ प्राप्त करने के लिए पशु को अधिक सर्दी, अधिक गर्मी व अधिक बरसात से बचाकर अच्छे व्यवहार के साथ रखना आवश्यक है, ताकि पशु की उर्जा मौसम से लड़ने में व्यर्थ न हो और यह उर्जा दूध उत्पादन बढ़ाने में लगे। आइए जानते हैं कि सर्दियों में पशुओं की देखभाल कैसे करें।

पशुओं को सर्दियों से बचाने में सबसे अहम भूमिका उनके आवास की है। यदि नया आधुनिक पशुघर बनाना है तो उसके लिए स्थान का चुनाव ऊंची जगह पर करें और उसका समतल होना जरूरी है। पशुघर सड़क के नजदीक होने से आसानी होती है। इसके साथ पशुघर के अन्दर धूप उत्तरी हिस्से में अधिक तथा दक्षिण भाग में कम से कम आनी चाहिए। इसके साथ पशुघर की दिशा ऐसी हो जो तेज ठण्ड से पशुओं का बचाव करती हो। अगर पशुघर के अन्दर धूप-रोशनी व हवा का आवागमन अच्छा होगा तो पशुघर के अन्दर नुकसानदायक गैसों (अमोनिया व कार्बन डाइआक्साइड) की उत्पत्ति कम होगी, जिससे पशु का स्वास्थ्य व दूध उत्पादन ठीक बना रहेगा।

सर्दी के मौसम में बाहर के तापमान व अन्दर के तापमान में काफी अन्तर आ जाता है। कई बार पशुघर के बाहर का तापमान शून्य तक चला जाता है, यानी पाला तक

जम जाता है। इससे बचाव के लिए पशु का बिछावन छह इंच मोटा करें, गीला ना होने दें व सूखा रखें। खिड़कियों पर बोरी व टाट के पर्दे लगाएं तथा ध्यान रखें कि ये पर्दे खिड़की व दरवाजे से चिपके नहीं व सीधी शीत लहर पशु को न लगे। पशुओं को पशुघर में भरपूर आराम मिलने की व्यवस्था होनी चाहिए।

### खान-पान

पशुओं को हमेशा संतुलित आहार दें, जिसके अन्दर ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज तत्व, पानी, विटामिन व वसा उपलब्ध हो। आप अपने घर में भी संतुलित आहार बना सकते हैं, जिसका 100 किलोग्राम का नमूना इस प्रकार है : अनाज व दाने (गेहूँ, बाजरा, मक्का, जौ, जई) – 40 किलोग्राम, चोकर – 25 किलोग्राम, खली (सरसों, बिनौला, सोयाबीन, मूंगफली इत्यादि) – 32 किलोग्राम, खनिज मिश्रण – 2 किलोग्राम, साधारण नमक – 1 किलोग्राम।



## विशेष ध्यान रखें

बिनौला विशेषतौर से ज्यादा दूध देने वाले पशुओं को खिलाना चाहिए। बिनौला दूध के अन्दर चिकनाई की मात्रा बढ़ाता है। बाजरा भी पशुओं को कम हजम होता है, इसलिए बाजरा किसी भी सन्तुलित आहार/बाखर में 20 प्रतिशत से अधिक नहीं मिलाना चाहिए। पशु की खोर के उपर सैंधा नमक का ढेला रखें ताकि पशु जरूरत के अनुसार उसको चाट ले।

इसके साथ सर्दी के मौसम में पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए पशु आहार में 35 प्रतिशत अतिरिक्त ऊर्जा वाले अनाज व दाने सम्मिलित करें। यानी 65 प्रतिशत तक ऊर्जा सर्दी के मौसम में विशेष तौर से दूध देने वाले पशु को देनी चाहिए। इसके साथ पशुओं को हरे चारे व सूखे चारे मिलाकर खिलाने चाहिए। कुछ पशुपालक भाई सर्दी के मौसम में हरे चारे अधिक होने के कारण सिर्फ हरा चारा खिलाने की कोशिश करते हैं, जिसके कारण पशुओं को अफारा व अपचन हो जाता है।

### पानी

पशुओं को सर्दी के मौसम में गुनगुना, ताजा व स्वच्छ पानी भरपूर मात्रा में पिलाएं, क्योंकि पानी से ही दूध बनता है तथा शरीर की सारी क्रियाएं सुचारु रूप से चलती हैं। पशु शरीर के अन्दर 65 प्रतिशत व दूध के अन्दर 83 से 87 प्रतिशत पानी होता है, इसलिए दूध उत्पादन में पानी का विशेष स्थान है।

### अन्य देखभाल

खान-पान का समय एक रखें। दूध निकालने का समय भी एक रखें। ज्यादा दुधारु पशुओं को ऊर्जा की पूर्ति के लिए विशेष तौर से गुड़ की आवटी पिलाएं, दूध निकालते समय लेवटी, थनों व पीछे की सफाई गुनगुने पानी से लाल दवाई मिलाकर करें। बाखर, दूध निकालते समय व बाद में जरूर खिलाएं, इससे पशु का पौसा बढ़िया रहता है व थनैले रोग से बचाव होता है। दूध निकालने की क्रिया पांच से सात मिनट में पूरी करें। ज्यादा समय लेने से पशु दूध चढ़ा लेता है, पूरा दूध नहीं उतारता। दुधारु पशुओं को अगर ठण्ड लग गई तो पशु का दूध कम हो

जाएगा व बच्चों को निमोनिया हो सकता है। इसमें कोई कोताही न बरतें, पशु चिकित्सक की तुरन्त राय लें। छोटे बच्चों को एंटीबायोटिक, विटामिन व जूण व चिचड़ का उपचार करें। मक्खी-मच्छर से बचाने के लिए मच्छर दानी का इस्तेमाल करें।

पशुघर के अन्दर अच्छी साफ-सफाई रखें। उनको धूप में बांधें व गर्म दिन वाले दिन ताजे पानी से नहलाएं व बाद में सरसों का तेल थोड़ा-थोड़ा शरीर पर लगाएं, इससे पशु के शरीर की खुश्की, चमड़ी पर रूखापन व खुजली होने से बचाव होगा।



पशु को धूप में भी लाएं

दिन में पशुघर के पर्दे वगैरह हटा दें, ताकि पशुघर के अन्दर रोशनी व हवा आर-पार हो जाए। रात को सूर्यास्त से पहले पशुओं को अन्दर बांध दें। इसके साथ-साथ पशुघर के अन्दर गाय को 3.5 वर्गमीटर व भैंस को 4 वर्ग मीटर स्थान दें। यानी कम जगह में अधिक पशु न बांधें। इसके साथ दिन में पशुओं को घूमने के लिए पशुघर के अन्दर के स्थान से दुगुना स्थान दें। ■

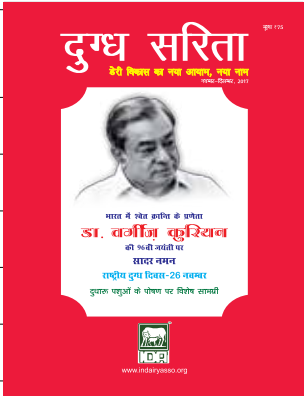
# दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाए

## RATE CARD

## DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion	Inaugural Offer
	Rs.	Rs.
<b>Back Cover</b> (Four Colours)*	18,000	12,000
<b>Inside Front Cover</b> (Four Colours)	14,400	10,000
<b>Inside Back Cover</b> (Four Colours)	14,400	10,000
<b>Inside Right Page</b> (Four Colours)	10,800	7,000
<b>Inside Left Page</b> (Four Colours)	9,600	6,000
<b>Facing Spread</b> (Four Colours)	16,800	11,000
<b>Half Page</b> (Four Colours)	5400	4000

\* Fifth colour: extra charges will be levied.



### TECHNICAL DETAILS

**Magazine Size** in cm — **Height** : 26.5 cm; **Width**: 20.5 cm  
Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

### Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

### Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: [ida.adv@gmail.com](mailto:ida.adv@gmail.com) in PDF & JPG OR CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

### Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: **Name:** Indian Dairy Association; **SB a/c No:** 90562170000024; **IFSC:** SYNB0009009; **Bank:** Syndicate Bank; **Branch Address:** Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.

#### Contact for Ads

Mr. Narendra Kumar Pandey  
Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

### Indian Dairy Association

IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022  
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237 Fax: 91-11-26174719  
E-mail: [ida.adv@gmail.com](mailto:ida.adv@gmail.com) Web: [www.indairyasso.org](http://www.indairyasso.org)





# अमूल दूध पीता है इंडिया



## अमूल दूध



## एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध गंदा और सेहत के लिए हानिकारक होता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज्ड पाउच दूध.  
यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है.  
इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: [f /amul.coop](https://www.facebook.com/amul.coop) | [t /amul.coop](https://www.twitter.com/amul.coop) | [You Tube /amulv](https://www.youtube.com/channel/UCm5v...) | [i /amul\\_india](https://www.instagram.com/amul_india) | Visit us at <http://www.amul.com>

10858336HIN

प्रकाशक व मुद्रक नरेश कुमार भनोट द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट,  
ए-89/1, फेज-1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन,  
आईडीए हाऊस, सेक्टर-4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली - 110022 से प्रकाशित, सम्पादक - जगदीप सक्सेना